وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ
يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ۝111 وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ
بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝112 وَلِتَصْغٰٓى
اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ۝113

आयत नं० 111 से 113

और (इन काफ़िरों की ज़िदबन्दी की तो यह हालत है कि) **अगर हम** (एक मांगी हुई निशानी तो क्या कई-कई और बड़ी-बड़ी निशानियां भी दिखा देते जैसे यह कि) **उन के पास फ़रिशतों को भेज देते** (जैसा वो कहते है) **और उन से मुर्दे** (ज़िन्दा हो कर) **बातें करने लगते** (जैसा वो कहते हैं) **और** (ये ही नहीं) **हम सभी** (छुपी) **चीज़ों को उन के पास उन की आंखों के सामने लाकर जमा कर देते** (कि सब को खुली आंखों देख लेते) **तब भी ये लोग ईमान लाने वाले नहीं थे हां मगर अल्लाह तआ़ला ही चाहे** (और उन का नसीब बदल दे) **तो और बात है लेकिन इन में ज़्यादा लोग जहालत की बातें करते** (हैं कि उन की नीयत ईमान लाने की है ही नहीं बस बेकार की मांगे करते) **हैं**(111) **और** (ये लोग जो आप से दुशमनी रखते हैं यह कोई नई बात नहीं बल्कि) **इसी तरह हम ने हर नबी के दुशमन बहुत से शैतान पैदा किये थे कुछ इन्सान** (जिन से असल वास्ता था) **और कुछ जिन्नात** (इबलीस और उस की औलाद) **जिन में से कुछ** (यानी इबलीस और उस का गिरोह) **दूसरे कुछ** (लोगों) **को** (यानी काफ़िर इन्सानों को) **चिकनी चुपड़ी बातें** (यानी कुफ़्र की बातें) **सिखाते रहते थे ताकि उन को धोके में डाल दें, और अगर अल्लाह चाहता तो वो ऐसा न कर सकते** (मगर कुछ वजहों से उन को यह छूट देदी है) **सो उन लोगों को और जो कुछ ये** (दीन के बारे में) **झूटी कार्रवाइयां कर रहे हैं उस को आप रहने दीजिए** (इस की फ़िक्र में न पड़िए हम ख़ुद ठीक वक़्त पर सज़ा देंगे)(112) **और** (वो शैतान इन काफ़िर इन्सानों को इस लिए बहकाते थे) **ताकि इस** (धोके की बात) **की तरफ़ उन लोगों के दिल झुक जाएं जो आख़रत पर** (जैसा होना चाहिए) **यक़ीन नहीं रखते** (मुराद काफ़िर लोग हैं चाहे किताब वाले हों क्योंकि जैसा होना चाहिए उन को भी यक़ीन नहीं) **और ताकि उस को दिल से भी पसन्द कर लें और ताकि** (ऐतक़ाद के बाद) **उन** (बुरे) **कामों को करते रहें जो वो करने वाले थे**(113)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि किसी को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाना नहीं अगर ज़बरदस्ती बनाना होता तो अल्लाह तआला से ज़्यादा ज़बरदस्त ज़ोरआवर कौन है वो ख़ुद ही सब को मुसलमान बना देते।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ
مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝١١٤ وَ تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ عَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ
لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝١١٥ وَ اِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا
الظَّنَّ وَ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝١١٦ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝١١٧

आयत नं० 114 से 117

(आप कह दीजिए कि मेरी पैग़म्बरी का फ़ैसला अल्लाह तआला ने क़ुरआन के मोजिज़े से कर दिया है और तुम फिर भी नहीं मानते) **तो क्या** (तुम यह चाहते हो कि इस ख़ुदाई फ़ैसले को छोड़ कर) **अल्लाह के सिवा किसी और को फ़ैसला करने वाला बनाऊं जब कि वो ऐसा** (साफ़ फ़ैसला कर चुका) **है कि उस ने एक किताब** (जो करामतों से भरपूर है) **तुम्हारे पास भेज दी** (है बस उस के कमाल ये हैं कि एक तो अल्लाह की तरफ़ से होना दूसरे मोजिज़ा होना तीसरे दीन के ज़रूरी हुक्मों को) **साफ़-साफ़ बयान करने वाली है, और** (चौथा कमाल इस का यह है कि पहली किताबों में इस की ख़बर दी गई है बस) **जिन लोगों को हम ने किताब** (यानी तौरेत व इन्जील) **दी है वो इस को यक़ीन के साथ जानते हैं कि यह** (क़ुरआन) **आप के रब की तरफ़ से सच्चाई के साथ भेजा गया है** (इस को जानते तो सब हैं, फिर जिन की सच बोलने की आदत थी उन्होंने बता भी दिया और जो ज़िद्दी थे वो छुपाते थे) **सो आप शक करने वालों में से न हों(114) और** (पांचवां कमाल यह कि) **आप के रब का** (यह) **कलाम सच्चाई और इन्साफ़ से** (भी) **पूरे कमाल वाला है,** (और छटा कमाल इस का यह है कि) **इस के** (इस) **कलाम को कोई बदलने वाला नहीं** (यानी अल्लाह हर तरह से इस की हिफ़ाज़त करने वाला है)**, और** (ऐसे पक्के सबूत पर भी जो लोग झुटलाएं तो) **वो** (यानी अल्लाह तआला उन की बातों को) **अच्छी तरह सुन रहे हैं** (और उन के अक़ीदों को) **अच्छी तरह जान रहे हैं** (अपने वक़्त पर उन को पूरी सज़ा देंगे) **(115) और** (ऐसे खुले सबूतों के बावजूद) **दुनिया में ज़्यादा लोग ऐसे** (न मानने वाले और गुमराह ही) **हैं कि अगर** (मान

लो) **आप उन का कहना मानने लगें तो वो आप को अल्लाह की** (सीधी) **राह से बेराह कर दें,** (क्योंकि वो खुद गुमराह हैं इस लिए अक़ीदों में) **वो सिर्फ़ बेअसल सोच पर चलते हैं और अटकली बातें करते हैं**(116) (और कुछ अल्लाह के बन्दे राह पर भी हैं और) **यक़ीन रक्खो आप का रब उस को** (भी) **अच्छी तरह जानता है जो उस की** (बताई हुई सीधी) **राह से भटक जाता है और वो** (ही) **उन को भी अच्छी तरह जानता है जो उस की** (बताई हुई) **राह पर चलते हैं** (बस गुमराहों को सज़ा मिलेगी और राह वालों को इनआम)(117)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि दुनिया में ज़्यादा आबादी गुमराह लोगों की है इसलिए किसी तरीक़े पर ज़्यादा लोगों का होना उस के हक़ होने की दलील नहीं।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ
وَ قَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَ اِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآىِٕهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَ ذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَ بَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا
يَقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَ لَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ اِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَ اِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى اَوْلِيٰٓـىِٕهِمْ
لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَ اِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

आयत नं० 118 से 121

नोटः- काफ़िरों ने मुसलमानों को शक में डालना चाहा कि अल्लाह के मारे हुए जानवर को तो खाते नहीं हो और अपने मारे हुए यानी ज़बह किये हुए जानवर को खाते हो उस पर ये आयतें उतरीं:-

(और जब ऊपर काफ़िरों के कहने पर चलने का बुरा होना पता चल गया) **तो जिस** (हलाल) **जानवर पर** (ज़बह के वक़्त सिर्फ़) **अल्लाह का नाम लिया जाए उसमें से** (बेझिजक) **खाओ** (और उस को जाइज़ व हलाल समझो) **अगर तुम उस के हुक्मों पर ईमान रखते हो** (क्योंकि हलाल को हराम समझना ईमान के ख़िलाफ़ है)(118) **और तुम्हारे लिए कौन सी रूकावट है जिस की वजह से तुम ऐसे जानवर से न खाओ जिस पर** (ज़बह के वक़्त सिर्फ़) **अल्लाह का नाम लिया गया हो जबकि अल्लाह तआला ने** (दूसरी आयत में) **उन सब जानवरों के बारे में बता दिया है जिन को तुम पर हराम किया है मगर वो** (हराम जानवर) **भी जब तुम को सख़्त ज़रूरत पड़**

जाए तो (मजबूरी में) **हलाल है, और यह सच बात है कि बहुत से आदमी** (कि उन्हीं में से ये भी हैं अपने साथ दूसरों को भी) **अपनी ग़लत सोच** (की वजह से) **गुमराह करते** (फिरते) **हैं,** (लेकिन कहां तक जान बचाएंगे क्योंकि) **इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला** (ईमान की) **हद से निकल जाने वालों को** (जिन में ये भी हैं) **अच्छी तरह जानता है** (बस एक बारगी सज़ा देगा)(119) **और तुम खुले गुनाह को भी छोड़ दो और छुपे गुनाह को भी** (छोड़ दो जैसे हलाल को हराम और हराम को हलाल समझना मन का यानी छुपा गुनाह है), **बेशक जो लोग गुनाह कर रहे हैं उन को उन के किये की जल्द ही** (क़ियामत में) **सज़ा मिलेगी(120) और ऐसे जानवरों में से मत खाओ जिन पर** (बताए तरीक़े से) **अल्लाह का नाम न लिया गया हो** (जैसा कि मुशरिक लोग करते हैं) **और यह बात** (यानी अल्लाह का नाम लिए बिना ज़बह किया हुआ खाना) **बड़ा गुनाह है, और** (उन लोगों की शक की बातों पर इसलिए ध्यान न दो कि) **बेशक** (जिन्नात) **शैतान अपने** (उन) **दोस्तों** (व ताबेदारों) **को** (ये शक की बातें) **सिखा रहे हैं ताकि ये तुम से** (बेकार) **बहस करें और अगर** (ख़ुदा न करे) **तुम** (उन अक़ीदों या कामों में) **उन लोगों के कहने पर चलो तो बेशक तुम मुशरिक हो जाओगे** (इसलिए उन से बचते रहना चाहिए)(121)।

नोटः- इमाम अबू हनीफ़ा रह० के नज़दीक जिस जानवर पर ज़बह करते वक़्त भूल से बिस्मिल्लाह पढ़ना छूट जाए वो जाइज़ है मगर जिस जानवर पर जान बूझ कर बिस्मिल्लाह पढ़ना छोड़ दे वो हराम है।

اَوَ مَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَ جَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِیْ بِهٖ فِی النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِی الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ
مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

आयत नं० 122

ऐसा आदमी जो कि पहले मुर्दा (यानी गुमराह) **था फिर हम ने उस को ज़िन्दा** (यानी मुसलमान) **बना दिया और हम ने उस को एक ऐसा नूर** (यानी ईमान) **दे दिया कि वो उस को लिए हुए लोगों में चलता फिरता है** (यानी हर वक़्त वो नूर उस के साथ रहता है जिस से वो सब नुक़सानों से जैसे गुमराही से बचा रहता है और बेफ़िक्र रहता है तो) **क्या ऐसा आदमी** (बुरी हालत में) **उस आदमी की तरह हो सकता है जो** (गुमराही के) **अन्धेरों में** (घिरा हुआ) **है** (और) **उन**

से निकलने नहीं पाता (मतलब यह कि वो मुसलमान नहीं हुआ, और इस का अचम्भा न किया जाए कि कुफ़्र पर उसके अन्धेरों के बावजूद वो क्यों जमा रहा वजह इस की यह है कि जिस तरह मोमिनों को उन का ईमान अच्छा लगता है) **इसी तरह काफ़िरों को उन के** (कुफ़ के) **काम अच्छे लगते हैं**(122)।

नोटः- कुरआन की इस मिसाल से मालूम हुआ कि ज़िन्दा सिर्फ़ वो आदमी है जो अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल पर ईमान लाए और हर काम में अल्लाह की वही की ताबेदारी करे क्योंकि सिर्फ़ इन्सानी अक़्ल से सही रास्ता नहीं पा सकते और जो ऐसा नहीं वो मुर्दा कहलाने का हक़दार है।

وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَ مَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَ
اِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَاۤ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔۘ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ
سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ
يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ
يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۵﴾

आयत नं० 123 से 125

और (यह कोई नई बात नहीं जिस तरह मक्के के अमीर लोग इन गुनाहों को कर रहे हैं और उन के असर से दूसरे लोग शामिल हो जाते हैं) **इसी तरह हम ने** (पहली उम्मतों में भी) **हर बस्ती में वहां के अमीरों ही को** (पहले) **गुनाह करने वाला बनाया** (फिर उन के असर से और आम लोग भी उन से मिल गये) **ताकि वो लोग वहां** (नबियों को सताने के लिए) **शरारतें किया करें** (जिससे उन का सज़ा का हक़दार होना अच्छी तरह साबित हो जाए)**, और वो लोग** (अपनी सोच में दूसरों को नुक़सान पहुंचाते हैं लेकिन असलीयत में) **अपने ही साथ शरारत कर रहे हैं** (क्योंकि उस की मुसीबत तो उन्हीं को भुगतनी पड़ेगी) **और** (जहालत से) **उन को** (इस की) **ज़रा ख़बर नहीं**(123) **और** (इन मक्का के काफ़िरों का जुर्म यहां तक बढ़ गया है कि) **जब उन को कोई आयत पहुंचती है तो** (बावजूद इस के कि अपनी करामत की वजह से पैग़म्बरी के सबूत में काफ़ी होती है मगर ये लोग फिर भी) **यह कहते है कि हम** (इन नबी पर) **हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे**

जब तक कि हम को भी एसी ही चीज़ न दी जाए जो अल्लाह के पैग़म्बर को दी जाती है (यानी वही या किताब जिसमें हम को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का हुक्म हो)**, इस मौक़े को तो अल्लाह ही अच्छी तरह जानता है जहां अपना पैग़ाम** (वही के वास्ते से) **भेजता** (है क्या हर कोई इस क़ाबिल हो गया) **है,** (आगे उस जुर्म की सज़ा का बयान है कि) **जल्दी ही उन लोगों को जिन्होंने यह जुर्म किया है अल्लाह के पास पहुंच कर** (यानी आख़िरत में) **रूसवाई होगी** (जैसा उन्होंने अपने को नबी के मुक़ाबिले में इज़्ज़त व पैग़म्बरी का हक़दार समझा था) **और सख़्त सज़ा** (मिलेगी) **उन की मक्कारियों की वजह से(124) सो** (ऊपर जो मोमिन व काफ़िर का हाल बताया गया इससे पता चला कि) **जिस आदमी को अल्लाह तआला** (भलाई के) **रास्ते पर चलाना चाहते हैं उस के सीने** (यानी दिल) **को इस्लाम** (लाने) **के लिए खोल देते हैं** (कि इस के मानने में झिजकता नहीं)**, और जिस को** (किसी वजह से) **बेराह रखना चाहते हैं उस के सीने को** (इस्लाम लाने से) **तंग** (और) **बहुत तंग कर देते हैं** (और उस को इस्लाम लाना ऐसा मुसीबत दिखाई देता है) **जैसे कोई** (मान लो) **आसमान में चढ़**(ना चाह)**ता हो** (और चढ़ा नहीं जाता और जी तंग होता है और मुसीबत का सामना होता है बस उस आदमी से चढ़ा नही जाता)**, इसी तरह अल्लाह तआला ईमान न लाने वालों पर फिटकार डालता है** (इस लिए उन से ईमान नहीं लाया जाता)(125)।

नोटः- दिल तंग होने का मतलब यह है कि उस में हक़ और भलाई के लिए कोई रास्ता नहीं रहता जब वो अल्लह का ज़िक्र सुनता है तो घबराहट होने लगती है और जब कुफ़्र व शिर्क की बातें सुनता है तो उन में दिल लगने लगता है।

وَ هٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ هُوَ وَلِيُّهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَ قَالَ
اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ وَ كَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ ع يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَ يُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ
يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَ غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ شَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

كٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝

आयत नं० 126 से 132

और यह (इस्लाम ही) **तुम्हारे रब का** (बताया हुआ) **सीधा रास्ता** (है जिस पर चलने में कामयाबी) **है,** (और इसी सीधे रास्ते को बताने के लिए) **हमने नसीहत मानने वालों के लिए इन आयतों को साफ़-साफ़ बयान कर दिया है(126)** (और जो इस रास्ते पर चलते हैं) **उन लोगों के वास्ते उन के रब के पास** (पहुंच कर) **सलामती** (यानी अमन चैन व सदा) **का घर** (यानी जन्नत) **है और वो** (ही) **उन का मददगार है उन के** (नेक) **कामों की वजह से(127) और** (वो दिन याद कीजिए) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला सब को जमा करेंगे** (और उन में से ख़ास काफ़िरों को हाज़िर करके उन में जो शैतान जिन्नात हैं उन से कहा जाएगा कि) **ऐ जिन्नात के गिरोह तुम ने इन्सानों** (के गुमराह करने) **में बड़ा हिस्सा लिया** (और उन को बहुत बहकाया और इसी तरह इन्सानों से भी पूछा जाएगा), **और जो इन्सान इन** (जिन्नात शैतानों) **के साथ दोस्ती रखने वाले थे वो** (भी) **कहेंगे कि हमारे रब** (आप सही कहते हैं सचमुच) **हम में एक ने दूसरे से** (गुमराही की बातों में) **नफ़ा उठाया था और** (असलीयत में हम उन के बहकाने से क़ियामत का इनकार करते थे लेकिन वो इनकार ग़लत साबित हुआ बस) **हम अपनी उस तय की हुई मुद्दत तक आ पहुंचें जो आप ने हमारे लिए तय की थी** (यानी क़ियामत आ गई), **अल्लाह तआ़ला** (सब काफ़िर जिन्नात व इन्सानों से) **कहेंगे कि तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है जिसमें सदा-सदा को रहेंगे** (कोई निकलने का रास्ता नहीं) **हां अगर अल्लाह ही** (निकालना) **चाहे तो दूसरी बात है** (लेकिन यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह भी नहीं चाहेगा इसलिए सदा उसी में रहना होगा), **बेशक आप का रब बड़ी हिकमत वाला और बड़ा इल्म वाला** (है इल्म से सब के जुर्म को जानता है और हिकमत से ठीक सज़ा देता) **है (128) और** (जिस तरह दुनिया में गुमराही में एक राय थे) **उसी तरह** (दोज़ख़ में भी) **कुछ काफ़िरों को** (उन जैसे) **कुछ** (काफ़िरों) **के पास** (इकट्ठे) **रक्खेंगे उन के** (कुफ़्र के) **कामों की वजह से (129) ऐ जिन्नात और इन्सानों के गिरोह** (तुम जो कुफ़्र व इनकार करते थे तो) **क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में के पैग़म्बर नहीं आए थे जो तुम से मेरे हुक्म बयान किया करते थे और तुम को इस आज के दिन** (के आने) **की ख़बर दिया करते थे** (फिर क्या वजह कि तुम कुफ़्र व इनकार से बाज़ नहीं आए), **वो सब कहेंगे कि हम सब अपने ऊपर** (जुर्म का) **इक़रार करते हैं**

और उन को (यहां) **दुनिया की ज़िन्दगी ने भूल में डाल रक्खा है** (कि दुनिया के मज़ों के चक्कर में आख़रत को भूले बैठे हैं) **और** (इसका नतीजा यह हुआ कि वहां) **ये लोग इक़रार करेंगे कि वो** (यानी हम) **काफ़िर** (थे और ग़लती पर) **थे(130) यह** (पैग़म्बरों का भेजना) **इस वजह से है कि आप का रब किसी बस्ती वालों को** (उन के) **कुफ़्र की वजह से** (दुनिया में भी) **ऐसी हालत में हलाक नहीं करता कि उस बस्ती के रहने वाले** (पैग़म्बरों के न आने की वजह से अल्लह के हुक्मों से) **बेख़बर हों(131) और** (जब पैग़म्बर आ गये और ख़बर हो गई फिर जैसा-जैसा कोई करेगा) **हर एक के लिए** (सज़ा व इनआम के वैसे ही) **दर्जे मिलेंगे उन के कामों की वजह से, और आप का रब उन के कामों से बेख़बर नहीं है**(132)।

नोटः- हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि एक क़िस्म के अच्छे व बुरे काम करने वाले एक साथ कर दिये जाएंगे नेक लोगों को नेकों के साथ जन्नत में और बुरे काम करने वाले दूसरे बुरों के साथ जहन्नम में पहुंचा दिये जाएंगे।

وَ رَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ يَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ
قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّ مَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَ جَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَ
الْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَ هٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَ مَا كَانَ
لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

आयत नं० 133 से 136

और आप का रब (पैग़म्बरों को इसलिए नहीं भेजता कि अल्लाह की पनाह उस को इबादत की ज़रूरत है वो तो इससे) **बिल्कुल बेपरवा है** (बल्कि इस लिए भेजता है कि वो) **रहमत वाला** (भी) **है** (अपनी रहमत से पैग़म्बरों को भेजा ताकि उन के वास्ते से लोगों को नफ़ा नुक़सान देने वाली चीज़ें पता चल जाएं), **अगर वो चाहे तो तुम सब को** (दुनिया से अचानक) **उठा ले और तुम्हारे बाद जिन** (लोगों) **को चाहे तुम्हारी जगह** (दुनिया में) **आबाद कर दे जैसा कि तुम को** (जो कि अब मौजूद हो) **एक दूसरी क़ौम की नस्ल से पैदा किया** (है कि उन का कहीं पता नहीं और तुम उन की जगह मौजूद हो अगर हम चाहें अचानक भी ऐसा कर दें किसी के होने न होने से हमारा कोई काम

अटका नहीं पड़ा बस पैग़म्बरों का भेजना हमारी ज़रूरत की वजह से नहीं तुम्हारी ज़रूरत की वजह से) **है**(133) **जिस चीज़ का** (पैग़म्बरों के वास्ते से) **तुम से वादा किया जाता है** (यानी क़ियामत व अज़ाब) **वो बेशक आने वाली चीज़ है और** (अगर गुमान हो कि चाहे क़ियामत आए मगर हम कहीं भाग जाएंगे जैसा दुनिया में कभी मुजरिम ऐसा कर सकता है तो अच्छी तरह समझ लो कि) **तुम** (अल्लाह तआ़ला को) **बेबस नहीं कर सकते** (कि उस के हाथ न आओ)(134) **आप कह दीजिए कि ऐ मेरी क़ौम तुम अपने तरीक़े पर काम करते रहो मैं भी** (अपने तरीक़े पर) **काम कर रहा हूं, सो अब जल्दी तुम को पता चल जाएगा कि इस दुनिया** (के कामों) **का अन्जाम किस के लिए अच्छा होगा** (हमारे लिए या तुम्हारे लिए)**, यह सच्ची बात है कि नाइन्साफ़ी करने वालों को कभी** (अन्जाम में) **कामयाबी न होगी**(135) **और अल्लाह तआ़ला ने जो खेती और जानवर पैदा किये हैं इन** (मुशरिक) **लोगों ने उन में से कुछ हिस्सा अल्लाह** (के नाम) **का ठहरा रक्खा है** (और कुछ बुतों के नाम का ठहरा रक्खा है जब कि पैदा करने में कोई साझी नहीं) **और अपनी समझ से कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है** (जो कि महमानों और ग़रीबों और मुसाफ़िरों में ख़र्च होता है) **और यह हमारे माबूदों का** (है जो ख़ास-ख़ास जगह जैसे पुजारियों पर ख़र्च होता) **है, फिर जो चीज़ इन माबूदों** (के नाम) **की होती है वो तो अल्लाह** (नाम के हिस्से) **की तरफ़ नहीं पहुंचती** (बल्कि अगर ग़लती से मिल भी जाए तो अलग निकाल ली जाती है) **और जो चीज़ अल्लाह** (के नाम) **की होती है वो उन के माबूदों** (के नाम के हिस्से) **की तरफ़ पहुंच जाती है** (कि अगर मिल जाए तो यह कह कर निकाली नहीं जाती कि अललाह तो बेपरवा है यानी ये माबूद मोहताज हैं)**, उन्होंने क्या बुरी बात तय कर रक्खी** (है क्योंकि पेहली बात तो अल्लाह का पैदा किया हुआ दूसरे के नाम क्यों जाए दूसरे फिर जितना अल्लाह का हिस्सा निकाला है उसमें से भी घट जाए तीसरे मोहताज को माबूद समझना कहां की समझदारी) **है**(136)।

नोटः- इन आयतों में मुशरिकों की कुछ जाहिलाना रस्मों का बयान है जैसे खेती की पैदावार से अल्लाह के साथ बुतों के नाम का हिस्सा निकालना कुछ जानवरों को बुतों के नाम छोड़ देना फिर उन से न कोई काम लेना और न उन का दूध खुद बरतना और इस काम को अल्लाह को राज़ी करने का सामान समझना और अपनी बेटियों को क़त्ल कर देना कुछ जानवरों में सिर्फ़ मर्दों का हक़ समझना औरतों का उसमें हिस्सा न समझना वग़ैरह।

وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ
شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ
بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن
مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ
سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

आयत नं० 137 से 140

और इसी तरह बहुत से मुशरिकों को उन के माबूदों (यानी शैतानों) **ने यह समझा रक्खा है कि अपनी औलाद को क़त्ल करना अच्छा काम है** (जैसे जहालत के ज़माने में लड़कियों को क़त्ल करने या ज़िन्दा गाड़ देने का रिवाज था) **ताकि** (इस बुरे काम से) **वो** (शैतान) **इन** (मुशरिकों) **को** (अ़ज़ाब का हक़दार बनाकर) **बर्बाद करें और ताकि उन को दीन के बारे में ग़लती में डाले रक्खें,** (और आप उन की बुरी हरकतों से दुखी न हों क्योंकि) **अगर अल्लाह तआ़ला** (उन का भला) **चाहते तो ये ऐसा काम न करते तो आप उन को और जो कुछ ये ग़लत बातें बना रहे हैं** (कि हमारा यह काम बहुत अच्छा है) **ऐसे ही रहने दीजिए** (कुछ फ़िक्र न कीजिए हम आप समझ लेंगे)(137) **और वो ये भी कहते हैं कि ये** (ख़ास) **जानवर और** (ख़ास) **खेत हैं जिन का बरतना हर आदमी को जाइज़ नहीं उन को कोई नहीं खा सकता सिवाए उन के कि जिन को हम चाहें और** (यह कहते हैं कि ये ख़ास) **जानवर हैं जिन पर सवारी करना या सामान लादना हराम कर दिया गया है और** (यह कहते हैं कि ये ख़ास) **जानवर हैं जिन पर** (अल्लाह का नाम नहीं लेना चाहिए बस इसी ऐतक़ाद की वजह से उन पर) **ये लोग अल्लाह का नाम नहीं लेते सिर्फ़ अल्लाह पर झूट बान्धने के लिए** (कहते हैं कि इन कामों को अल्लाह को ख़ुश करने का सामान समझते हैं), **अभी** (यानी मरते ही) **अल्लाह तआ़ला उन को उनके झूट की सज़ा देता है**(138) **और वो** (यह भी) **कहते हैं कि जो चीज़ इन जानवरों के पेट में** (से निकलती) **है** (जैसे दूध या बच्चा) **वो सिर्फ़ हमारे मर्दों के लिए** (हलाल) **है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर वो** (पेट का निकला हुआ बच्चा) **मुर्दा हो तो उस** (से नफ़ा उठाने) **में** (मर्द व औरत) **सब बराबर**

हैं, अभी अल्लाह तआ़ला उन को उन की (इस) **ग़लत बयानी की सज़ा देता है,** (और अब तक जो सज़ा नहीं दी तो वजह यह है कि) **बेशक वो हिकमत वाला** (है कुछ हिकमतों से ढील दे रक्खी) **है वो बड़ा इल्म वाला** (है उस को सब ख़बर) **है(139) सचमुच बड़े नुक़सान में हैं वो लोग जिन्होंने** (इन कामों को अपना तरीक़ा बना लिया कि) **अपनी औलाद को बेवक़ूफ़ी से बिना किसी इल्मी सनद के क़त्ल कर दिया और जो** (हलाल) **चीज़ें उन को अल्लाह तआ़ला ने खाने पीने को दी थी उन को** (ऐतक़ाद से या अ़मल से) **हराम कर लिया सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर झूट बान्ध कर, बेशक ये लोग गुमराही में पड़ गये और** (पहले भी) **कभी राह चलने वाले नहीं हुए(140)।**

وَ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّ غَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّ النَّخْلَ وَ الزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَ الزَّيْتُوْنَ وَ الرُّمَّانَ
مُتَشَابِهًا وَّ غَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَ اٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَ لَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِيْنَ ۙ﴿۱۴۱﴾ وَ مِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّ فَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۴۲﴾

आयत नं० 141 से 142

और वो ही (अल्लाह पाक) **है जिसने बाग़ पैदा किये वो भी जो सहारे से ऊपर चढ़ाए जाते हैं** (जैसे अंगूर) **और वो भी जो सहारे से ऊपर नहीं चढ़ाए जाते** (जैसे ख़रबूज़ा, तरबूज़ और सभी तनेदार पेड़) **और खजूर के पेड़ और खेतियां** (भी उसने पैदा कीं) **जिन में खाने की चीज़ें अलग-अलग तरह की मिलती हैं और ज़ैतून और अनार** (भी उसी ने पैदा किये) **जो** (अनार-अनार) **आपस में** (और ज़ैतून-ज़ैतून आपस में रंग, मज़ा व सूरत में) **एक दूसरे से मिलते जुलते होते हैं और** (कभी) **एक दूसरे से मिलते जुलते नहीं भी होते,** (और अल्लाह तआ़ला ने इन सब चीज़ों को पैदा करके इजाज़त दी है कि) **इन सब की पैदावार खाओ जब वो निकल आएं और** (इस के साथ इतना ज़रूर है कि) **इसमें जो हक़** (शरीअ़त से) **वाजिब है** (यानी ख़ैर ख़ैरात) **वो उस के काटने** (तोड़ने) **के दिन** (ग़रीबों को) **दिया करो और** (इस देने में भी शरीअ़त की) **हद से आगे मत बढ़ो, बेशक वो** (यानी अल्लाह तआ़ला शरीअ़त की) **हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करते(141) और** (इसी तरह बहुत से जानवर भी पैदा किये कि उन) **जानवरों में ऊंचे**

क़द के (भी) **और छोटे क़द के** (भी उसी ने पैदा किये, और उन के बारे में भी इजाज़त दी कि) **जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने तुम को दिया है** (और शरीअ़त से हलाल किया है उस को) **खाओ और** (अपनी तरफ़ से हराम होने के हुक्म घड़ कर) **शैतान के क़दमों पर मत चलो, बेशक वो तुम्हारा खुला दुशमन** (है कि तुम को सच्चे दीन के साफ़ सबूतों के बावजूद गुमराह कर रहा) **है**(142)।

नोटः- यहां यह बता दिया गया कि अल्लाह की राह यानी नेक कामों में हद से ज़्यादा ख़र्च करना भी पसन्दीदा नहीं तो दूसरे कामों में ख़र्च करना कितना बड़ा गुनाह होगा। और ये ही हुक्म वक़्त की फ़ुज़ूल ख़र्ची का भी है कि उस को बर्बाद करना भी गुनाह है और ऐसे ही दीन के ग़ैर वाजिब कामों में भी हद से बढ़ जाना कि ज़रूरी हक़ छूट जाएं गुनाह है।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَ مِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ
عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِیْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَ مِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَ مِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ
ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ
بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِی الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِیْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ
لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَ عَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِیْ ظُفُرٍ ۚ وَ مِنَ الْبَقَرِ وَ الْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ اِلَّا مَا
حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ٘ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ
فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

आयत नं० 143 से 147

(और ये जानवर जिन में हलाल हराम की बात हो रही है) **आठ नर व मादा** (पैदा किये) **यानी भेड़** (और दुम्बा) **में दो क़िस्म** (एक नर एक मादा) **और बकरी में दो क़िस्म** (एक नर और एक मादा), **आप** (उन से) **कहिए कि** (यह तो बताओ कि) **क्या अल्लाह तआ़ला ने इन** (दोनो

जानवर) **के दोनों नरों को हराम कहा है या दोनों मादा को** (हराम कहा है) **या उस** (बच्चे) **को जिस को दोनों** (नस्लों की) **मादा** (अपने) **पेट में लिए हुए हों** (वो बच्चा नर हो या मादा यानी क्या इन को अल्लाह ने हराम किया है), **तुम मुझ को किसी दलील से तो बताओ अगर** (अपने दावे में) **सच्चे हो**(143) **और** (इसी तरह) **ऊंट में दो क़िस्म** (एक नर और एक मादा) **और गाय** (और भैंस) **में दो क़िस्म** (एक नर और एक मादा पैदा किये), **आप** (इन से इस बारे में भी) **कहिए कि** (यह तो बताओ कि) **क्या अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों** (जानवर के) **नरों को हराम कहा है या दोनों के मादा को** (हराम कहा है) **या उस** (बच्चे) **को जिस को दोनों** (नस्लों की) **मादा** (अपने) **पेट में लिये हुए हों** (वो बच्चा नर हो या मादा क्या अल्लाह तआ़ला ने इन को हराम किया है), **क्या तुम** (उस वक़्त) **हाज़िर थे जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने तुम को इस** (हराम हलाल होने) **का हुक्म दिया** (खुली बात है कि इस का दावा भी नहीं हो सकता और पैग़म्बर का तुम इनकार करते हो जिससे पता चलता बस साबित गया कि उन के पास कोई दलील नहीं), **तो उससे ज़्यादा कौन ज़ालिम** (और झूटा) **होगा जो अल्लाह तआ़ला पर बिना दलील** (हराम व हलाल के बारे में) **झूटा इल्ज़ाम लगाए ताकि लोगों को गुमराह करे** (यानी यह आदमी बड़ा ज़ालिम होगा), **बेशक अल्लाह तआ़ला ज़ालिम लोगों को** (आख़रत में जन्नत का) **रास्ता नहीं दिखाएंगे** (बल्कि दोज़ख़ में भेजेंगे बस ये लोग भी इस जुर्म की सज़ा में दोज़ख़ में जाएंगे)(144) **आप** (ऐ पैग़म्बर) **कह दीजिए कि जो कुछ हुक्म वही के वास्ते से मेरे पास आए हैं उन में तो कोई ऐसी चीज़ नहीं पाता जिस का खाना किसी खाने वाले के लिए** (चाहे मर्द हो या औरत) **हराम हो मगर** (इन चीज़ों को हराम पाता हूं वो) **यह कि मुरदार** (जानवर) **हो** (यानी जो हलाल होने के बावजूद शरीअ़त से ज़बह किये बिना मर जाए) **या यह कि बहता हुआ ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो क्योंकि वो** (सुअर) **बिल्कुल नापाक है या जो** (जानवर) **शिर्क का सामान हो** (इस तरह) **अल्लाह के सिवा** (किसी) **दूसरे** (के ख़ुश करने) **के लिए नामज़द कर दिया गया हो** (तो ये सब हराम हैं), **फिर** (भी इसमें इतनी आसानी रक्खी है कि) **जो आदमी** (भूक से बहुत ही) **बेचैन हो जाए शर्त यह है कि न तो** (खाने में) **मज़ा चाहता हो और न** (ज़रूरत की हद से) **आगे बढ़ने वाला हो तो** (इस हालत में इन हराम चीज़ों से खाने में भी उस आदमी को कुछ गुनाह नहीं होता) **सचमुच आप का रब** (उस आदमी के लिए) **मुआफ़ करने वाला रहम करने वाला है** (कि ऐसे वक़्त में यह रहमत की कि गुनाह की चीज़ में से गुनाह उठा दिया)(145) **और यहूदियों पर हम ने सभी नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिये थे, और गाय और बकरी** (के हिस्सों में से) **उन दोनों की चर्बियां उन** (यहूदियों)

पर हम ने हराम कर दी थी मगर वो (चर्बी छोड़ कर) **जो उन** (दोनों) **की पीठ पर या आन्तो में लगी हो या जो** (चर्बी) **हड्डी से मिली हुई हो** (बाक़ी सब चर्बी हराम थी, और असल में यह हराम न थी बल्कि) **उन की शरारत की वजह से हम ने उन को यह सज़ा दी थी, और हम बेशक सच्चे हैं**(146) **फिर** (भी) **अगर ये** (काफ़िर) **आप को** (अल्लाह की पनाह सिर्फ़ इस वजह से) **झूटा कहते हैं** (कि उन पर अज़ाब नहीं आता) **तो आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि तुम्हारा रब बहुत बड़ी रहमत वाला है** (कुछ हिकमतों से जल्दी पकड़ नहीं करता) **और** (इससे यह न समझो कि सदा ऐसे ही बचे रहेंगे जब वो तय किया हुआ वक़्त आजाएगा फिर उस वक़्त) **उस का अज़ाब मुजरिम लोगों से** (किसी तरह) **न टलेगा**(147)।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ
إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ
يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾

आयत नं० 148 से 150

ये मुशरिक लोग यह कहेंगे कि अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप दादा (शिर्क करते) **और न हम** (और न हमारे बड़े) **किसी चीज़ को** (जिन का ऊपर ज़िक्र आ चुका) **हराम कर सकते** (इससे पता चला कि अल्लाह तआ़ला इन बातों से नाराज़ नहीं, अल्लाह तआ़ला जवाब देते हैं कि यह दलील ग़लत है और जिस तरह ये पैग़म्बर को झुटलाते हैं) **इसी तरह जो** (काफ़िर) **लोग इन से पहले हो चुके हैं उन्होंने भी** (रसूलों को) **झुटलाया था यहां तक कि उन्होंने हमारे अज़ाब का मज़ा चक्खा** (चाहे दुनिया में जैसे बहुत से पहले काफ़िरों पर अज़ाब आया या मरने के बाद तो होना ही है), **आप** (उन से) **कहिए कि क्या तुम्हारे पास कोई दलील है** (कि अल्लाह इस बात पर नाराज़ नहीं अगर है) **तो उस को हमारे सामने लाओ,** (असल बात यह है कि दलील कुछ भी नहीं) **तुम लोग सिर्फ़ गुमानों पर चलते हो और तुम बिल्कुल अटकल से बातें करते हो**(148) (फिर) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि बस** (साबित हुआ कि)

ऐसी दलील तो अल्लाह ही की है जो (दिलों तक) **पहुंचती है, फिर अगर वो चाहता तो तुम सब को** (सीधी) **राह पर ले आता** (मगर अल्लाह तआ़ला की बहुत सी हिकमतें हैं किसी को तौफ़ीक़ दी किसी को नहीं)(149) **आप** (उन से) **कहिए कि गवाहों को लाओ जो इस बात पर** (क़ाइदे से) **गवाही दें कि अल्लाह तआ़ला ने इन** (बताई) **चीज़ों को हराम कर दिया है, फिर अगर** (किसी को फ़र्ज़ी झूटे गवाह बना कर ले आएं और) **वो** (गवाह इस की) **गवाही** (भी) **देदें तो** (चूंकि वो गवाही झूटी होगी इसलिए) **आप ऐसी गवाही का ऐतबार न करना और ऐसे लोगों की मर्ज़ी पर मत चलना जो हमारी आयतों को झुटलाते हैं और जो आख़रत पर ईमान नहीं रखते** (और इसी वजह से निडर होकर सच्चे दीन की तलाश नहीं करते) **और वो** (इबादत में) **अपने रब की बराबर दूसरों को साझी ठहराते** (हैं यानी शिर्क करते) **हैं**(150)।

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ
اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَ اِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ
حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَ اِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَ
لَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَ بِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِىْ مُسْتَقِيْمًا
فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

आयत नं० 151 से 153

आप (उन से) **कह दीजिए कि आओ मैं तुम को वो चीज़ें पढ़ कर सुनाऊं जिन को तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किया है वो** (चीज़ें ये हैं कि एक) **यह कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को साझी मत ठहराओ** (बस शिर्क करना हराम हुआ) **और** (दूसरे यह कि) **मां बाप के साथ अच्छा बरताव किया करो** (बस उन से बुरा बरताव हराम हुआ) **और** (तीसरे यह कि) **अपनी औलाद को ग़रीबी की वजह से क़त्ल मत किया करो** (जैसा कि जहालत के ज़माने में आदत थी)**, हम उन को और तुम को** (दोनों को नसीब की) **रोज़ी देंगे** (वो तुम्हारे नसीब की रोज़ी में साझी नहीं हैं फिर क्यों क़त्ल करते हो, बस क़त्ल करना हराम हुआ)**, और** (चौथे यह कि) **बेहयाई** (यानी बदकारी) **के जितने तरीक़े हैं उन के पास भी मत जाओ चाहे खुले हों चाहें छुपे हों**

(बस बदकारी करना हराम हुआ), **और** (पांचवे यह कि) **जिस का ख़ून करना अल्लाह ने हराम कर दिया है उस को क़त्ल मत करो हां मगर हक़** (बात) **पर** (क़त्ल करना जाइज़ है जैसे सज़ाए मौत पर बस नाहक़ क़त्ल करना हराम हुआ), **इस** (सब) **का तुम को** (अल्लाह तआला ने) **ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम** (उन को) **समझो** (और समझ कर अमल करो)(151) **और** (छटे यह कि) **यतीम के माल के पास मत जाओ** (यानी उन का माल ख़र्च मत करो) **मगर ऐसे तरीक़े से** (ख़र्च की इजाज़त है) **जो कि** (उस के लिए) **बेहतर हो** (जैसे कि उस के काम में लगाना उस की हिफ़ाज़त करना और कुछ ज़िम्मेदारों को यतीम के लिए तिजारत करने की भी इजाज़त है) **यहां तक कि वो अपनी जवानी की उम्र को पहुंच जाए** (फिर उस का माल उस को दे दिया जाए जब कि समझदारी भी देखो), **और** (सातवें यह कि) **नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ़ के साथ** (कि किसी का हक़ अपने पास न रहे बस इसमें धोका करना हराम हुआ और ये हुक्म कुछ मुश्किल नहीं क्योंकि) **हम** (तो) **किसी आदमी को उस की हिम्मत से ज़्यादा किसी चीज़ का हुक्म नहीं देते** (फिर हुक्मों में सुस्ती क्यों की जाए), **और** (आठवें यह कि) **जब तुम** (फ़ैसले या गवाही के बारे मे कोई) **बात किया करो तो** (उस में) **इन्साफ़** (का ध्यान) **रक्खा करो चाहे वो आदमी** (जिस के मुक़ाबिले में वो बात कह रहे हो तुम्हारा) **रिश्तेदार ही हो** (बस नाइन्साफ़ी हराम हुई), **और** (नवें यह कि) **अल्लाह तआला से जो वादा किया करो** (जैसे क़सम या जाइज़ मन्नत) **उस को पूरा किया करो** (बस वादा ख़िलाफ़ी भी हराम हुई), **इन** (सब) **का अल्लाह तआला ने तुम को ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम याद रक्खो** (और अमल करो)(152) **और यह** (भी कह दीजिए) **कि** (कुछ ये ही हुक्म ख़ास नहीं बल्कि) **यह दीन** (इस्लाम और इसके सभी हुक्म) **मेरा रास्ता है** (जिस की तरफ़ मैं अल्लाह के हुक्म से बुलाता हूं) **जो कि** (बिल्कुल) **सीधा** (रास्ता) **है सो इस राह पर चलो, और दूसरी राहों पर मत चलो कि वो राहें तुम को अल्लाह की राह से अलग** (और दूर) **कर देंगी, इस का तुम को अल्लाह तआला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम** (इस राह के ख़िलाफ़ करने से) **परहेज़ रक्खो**(153)।

नोटः- काब अहबार रह० जो तौरेत के माहिर आलिम हैं पहले यहूदी थे फिर मुसलमान हुए वो कहते हैं कि क़ुरआन की आयतें जिन में दस हराम चीज़ों का बयान है अल्लाह की किताब तौरेत बिस्मिल्लाह के बाद इन्हीं आयतों से शुरू होती है। और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक सभी

पैग़म्बरों की शरीअत में ये हुक्म मौजूद हैं इस में से कोई चीज़ किसी शरीअ़त में बदली नहीं गई। (तफ़सीर बहरे मुहीत)

ऊपर आयतों में नौ हुक्मों का बयान है और दसवां हुक्म रसूल की ताबेदारी है बस रसूल की नाफ़रमानी भी हराम हुई। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَ تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ
يُؤْمِنُوْنَ ۝١٥٤ وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَ اتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝١٥٥ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى
طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَ اِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝١٥٦ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى
مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ صَدَفَ
عَنْهَا ؕ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝١٥٧ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ
تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا
اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝١٥٨

आयत नं० 154 से 158

फिर (हमने सिर्फ़ आप को अकेला नबी नहीं बनाया जिस पर ये लोग इतना हंगामा कर रहे हैं बल्कि आप से पहले) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **किताब** (तौरेत) **दी थी जिससे नेक लोगों पर** (हमारी) **नेमत पूरी हो और हर हुक्म को साफ़-साफ़ बयान कर दिया जाए और** (मानने वालों के लिए) **हिदायत व रहमत हो** (और हम ने ऐसी किताब इसलिए दी) **ताकि वो लोग** (यानी बनी इस्राईल आख़रत में) **अपने रब से मिलने पर यक़ीन लाएं** (और मिलने के ऐतक़ाद से सब हुक्मों पर अमल करें)**(154) और** (जब उस का और इन्जील का दौर पूरा हो चुका उस के बाद) **यह** (क़ुरआन) **एक किताब है जिस को हम ने** (आप के पास) **भेजा** (जो) **बड़ी भलाई व बरकत वाली** (है) **सो** (अब) **इस पर चलो और** (इससे ख़िलाफ़ करने के बारे में अल्लाह से) **डरो ताकि तुम पर** (अल्लाह तआ़ला की) **रहमत हो(155)** (और हम ने यह क़ुरआन इस लिए भी उतारा कि) **कभी तुम लोग** (क़ियामत में इसके न आने की सूरत में कुफ़्र व शिर्क पर अज़ाब के वक़्त) **यह कहने लगते कि** (आसमानी) **किताब तो सिर्फ़ हम से पहले जो दो गिरोह** (यहूदी व ईसाई) **थे उन पर उतरी थी, और हम उन के पढ़ने पढ़ाने में अन्जान थे** (इसलिए हम को

तौहीद की तस्दीक़ न हुई)(156) **या** (दूसरे पहले मोमिनों को सवाब मिलने के वक़्त) **यह कहते कि अगर हम पर कोई किताब उतरती तो हम उन** (पहले मोमिनों) **से भी ज़्यादा राह पर होते** (और ज़्यादा सवाब कमाते), **सो** (याद रक्खो कि) **अब** (तुम्हारे पास बताने को कोई मजबूरी नहीं) **तुम्हारे पास** (भी) **तुम्हारे रब के पास से एक किताब** (जिसके हुक्म) **साफ़** (हैं) **और** (जो) **राह दिखाने वाली** (है) **और** (अल्लाह की) **रहमत** (है) **आ चुकी है, सो** (ऐसी किताब आने के बाद) **उस आदमी से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो हमारी इन आयतों को झूटा बताए और** (दूसरों को भी) **इससे रोके, हम अभी** (आख़िरत में) **उन लोगों को जो कि हमारी आयतों से रोकते हैं इस** (झुटलाने और) **रोकने की वजह से सख़्त सज़ा देंगे(157) ये लोग** (जो कि किताब आ जाने और सच्चाई जानने के बाद भी ईमान नहीं लाते अपने ईमान लाने के लिए) **सिर्फ़ इस बात की इन्तिज़ार में** (लगते) **हैं कि उन के पास फ़रिशते आएं या उन के पास आप का रब आए** (जैसा क़ियामत में हिसाब के वक़्त होगा) **या आप के रब की कोई बड़ी निशानी** (क़ियामत की निशानियों में से) **आए** (जैसे सूरज का पच्छिम से निकलना मतलब यह कि क्या ईमान लाने में क़ियामत का इन्तिज़ार है, तो इस के बारे में सुन रक्खें कि) **जिस दिन आप के रब की** (यह) **बड़ी निशानी आ पहुंचेगी** (उस दिन) **किसी ऐसे आदमी का ईमान उस के काम न आएगा जो पहले से ईमान नहीं रखता हो** (बल्कि उसी दिन ईमान लाया हो) **या** (ईमान तो पहले से भी रखता हो लेकिन) **उस ने अपने ईमान में कोई नेक काम न किया हो** (बल्कि बुरे कामों और गुनाहों में घिरा हो और उस दिन तौबा करना चाहे तो उस की तौबा क़ुबूल न होगी, और अगर इस समझाने पर भी ईमान न लाऐं तो) **आप कह दीजिए कि** (ठीक है) **तुम** (इन बातों का) **इन्तिज़ार करो** (और मुसलमान नहीं होते मत हो) **हम भी** (इन बातों के) **इन्तिज़ार में हैं** (कि उस वक़्त तुम पर मुसीबत पड़ेगी और हम मोमिन इन्शा अल्लाह तआ़ला बख़्शे जाएंगे)(158)।

नोटः- क़ियामत की बड़ी निशानी सूरज के पच्छिम से निकलने के बाद तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा। (बग़वी)

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

आयत नं० 159 से 160

बेशक जिन लोगों ने अपने दीन में अलग-अलग राहें निकाल लीं (और कुफ़्र, शिर्क व बिदअ़त के तरीक़े अपना लिए) **और बहुत से फ़िरक़े हो गये आप का उन से कोई वास्ता** (नहीं यानी आप उन से बरी हैं आप पर कोई इल्ज़ाम) **नहीं, बस** (वो ख़ुद अपनी नेकी व बुराई के ज़िम्मेदार हैं, और) **उन का मुआमला अल्लाह के हवाले है** (वो देख भाल रहे हैं) **फिर** (क़ियामत में) **उन को उन का किया हुआ जितला** (देंगे और दलील से साबित कर सज़ा) **देंगे(159) जो आदमी नेक काम करेगा उस को** (कम से कम दर्जा) **उस के दस हिस्से मिलेंगे** (यानी जितना सवाब उस नेकी पर मिलता उससे दस गुना ज़्यादा सवाब मिलेगा) **और जो आदमी बुरा काम करेगा तो उस आदमी को उस** (की बुराई) **के बराबर ही सज़ा मिलेगी** (ज़्यादा न मिलेगी) **और उन लोगों पर** (ज़रा भी) **ज़ुल्म न होगा** (कि कोई नेकी लिखी न जाए या कोई बुराई ज़्यादा करके लिख ली जाए)(**160**)।

नोटः- एक हदीस में है कि मेरी उम्मत के 73 फ़िरक़े हो जाएंगे जिन में से एक फ़िरक़े के सिवा सब दोज़ख़ में जाएंगे सहाबा ने पूछा वो बख़्शा जाने वाला फ़िरक़ा कौन सा है तो बताया कि वो जमाअ़त जो मेरे तरीक़े पर और मेरे सहाबा के तरीक़े पर चलेगी वो बख़्शी जाएगी। और कहा गया कि दीन में नई पैदा की हुई हर चीज़ बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही है। (तिरमिज़ी)

قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۚ۬ دِیْنًا قِیَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ۚ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۶۱﴾
قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُكِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۲﴾ لَا شَرِیْكَ لَهٗ ۚ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَ اَنَا اَوَّلُ
الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۶۳﴾ قُلْ اَغَیْرَ اللّٰهِ اَبْغِیْ رَبًّا وَّ هُوَ رَبُّ كُلِّ شَیْءٍ ؕ وَ لَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَیْهَا ۚ وَ لَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ
خَلٰٓىِٕفَ الْاَرْضِ وَ رَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّیَبْلُوَكُمْ فِیْ مَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِیْعُ الْعِقَابِ ۖؗ وَ اِنَّهٗ
لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۶۵﴾

आयत नं० 161 से 165

(ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि मुझ को मेरे रब ने एक सीधा रास्ता** (वही के वास्ते से) **बता दिया है कि वो एक सच्चा** (और पक्का) **दीन है जो तरीक़ा है इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **का**

जिसमें ज़रा कमी नहीं, और वो (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) **शिर्क करने वालों में से नहीं थे**(161) (और) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि** (इस दीन का सार यह है कि) **बेशक मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादतें और मेरा जीना और मरना यह सब ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है जो मालिक है सारे जहानों का**(162) **उस का** (इबादत में) **कोई साझी नहीं, और मुझ को इसी** (दीन पर रहने) **का हुक्म हुआ है और** (हुक्म के मुवाफ़िक़) **मैं** (इस दीन वालों में) **सब मानने वालों से पहला** (मानने वाला) **हूं**(163) **आप** (इन ग़लत राह की तरफ़ बुलाने वालों से) **कह दीजिए कि क्या** (इस्लाम व तौहीद की सच्चाई साबित हो जाने के बाद तुम्हारे कहने से) **मैं अल्लाह के सिवा किसी और को रब बनाने के लिए तलाश करूं** (यानी अल्लाह की पनाह शिर्क करूं) **जब कि वो मालिक है हर चीज़ का, और** (तुम जो कहते हो कि तुम्हारा गुनाह हमारे सर यह बेहूदा बात है कि करने वाला पाक साफ़ रहे और सिर्फ़ दूसरा गुनाहगार हो जाए बल्कि बात यह है कि) **जो आदमी भी कोई काम करता है वो उसी पर रहता है और कोई दूसरे** (के गुनाह) **का बोझ न उठाएगा** (बल्कि सब अपनी-अपनी भुगतेंगे)**, फिर** (बाद में) **तुम सब को अपने रब के पास जाना होगा फिर वो तुम को बता देंगे जिस-जिस चीज़ में तुम झगड़ा करते थे** (कि कोई किसी दीन को सही बता था और कोई किसी दीन को वहां फ़ैसला कर दिया जाएगा कि सच्चे दीन वाले बख़्शे जाएंगे और झूटो को सज़ा होगी)(164) **और वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिस ने तुम को ज़मीन में दूसरों की जगह आबाद किया और एक का दूसरे पर** (बहुत सी चीज़ों में) **रूतबा बढ़ाया ताकि** (इन नेमतों से) **तुम को** (खुले तौर पर) **आज़माए उन चीज़ों में जो कि** (नेमतें) **तुम को दी हैं** (आज़माना यह कि कौन इन नेमतों की क़द्र करके नेमत देने वाले की ताबेदारी करता है और कौन बेक़द्री करके ताबेदारी नहीं करता)**, बेशक आप का रब जल्दी सज़ा देने वाला** (भी) **है, और बेशक वो बड़ा मुआफ़ करने वाला महरबानी करने वाला** (भी है बस कहना न मानने वालों के लिए सज़ा है और तौबा करने वालों के लिए बख़्शिश और ताबेदारों के लिए रहमत) **है**(165)।

नोटः- एक हदीस में है कि सूरत अनआम पूरी एक बार में उतरी और इस शान के साथ उतरी कि सत्तर हज़ार फ़रिशते उस के साथ तस्बीह पढ़ते हुए आए।

और हज़रत अ़ली रज़ि० से बयान है कि यह सूरत जिस मरीज़ पर पढ़ी जाए अल्लाह तआ़ला उस को शिफ़ा देते हैं। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

7-सूरत-आराफ़

इस मक्की सूरत में 24 रूकू और 206 आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓصٓ ﴿۱﴾ کِتٰبٌ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ فَلَا یَکُنۡ فِیۡ صَدۡرِکَ حَرَجٌ مِّنۡہُ لِتُنۡذِرَ بِہٖ وَ ذِکۡرٰی لِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۲﴾ اِتَّبِعُوۡا مَاۤ اُنۡزِلَ
اِلَیۡکُمۡ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ وَ لَا تَتَّبِعُوۡا مِنۡ دُوۡنِہٖۤ اَوۡلِیَآءَ ؕ قَلِیۡلًا مَّا تَذَکَّرُوۡنَ ﴿۳﴾ وَ کَمۡ مِّنۡ قَرۡیَۃٍ اَہۡلَکۡنٰہَا فَجَآءَہَا
بَاۡسُنَا بَیَاتًا اَوۡ ہُمۡ قَآئِلُوۡنَ ﴿۴﴾ فَمَا کَانَ دَعۡوٰىہُمۡ اِذۡ جَآءَہُمۡ بَاۡسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡۤا اِنَّا کُنَّا ظٰلِمِیۡنَ ﴿۵﴾
فَلَنَسۡـَٔلَنَّ الَّذِیۡنَ اُرۡسِلَ اِلَیۡہِمۡ وَ لَنَسۡـَٔلَنَّ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۶﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَیۡہِمۡ بِعِلۡمٍ وَّ مَا کُنَّا غَآئِبِیۡنَ ﴿۷﴾

आयत नं० 01 से 07

अलिफ़ लाम मीम साद (इसका मतलब तो अल्लाह व रसूल के बीच एक राज़ है जिस की उम्मत को ख़बर नहीं दी गई)(01) **यह** (कुरआन) **एक किताब है जो** (अल्लाह की तरफ़ से) **आप के पास इसलिए भेजी गई है कि आप इस के वास्ते से** (लोगों को नाफ़रमानी की सज़ा से) **डराएं सो आप के दिल में** (किसी के न मानने से) **कोई परेशानी न होनी चाहिए** (क्योंकि किसी के न मानने से आप के असली काम कि सिर्फ़ पैग़ाम पहुंचा देना है में कोई रूकावट नहीं आती फिर आप क्यों परीशान हों) **और यह** (कुरआन ख़ास कर) **नसीहत है ईमान वालों के लिए**(02) (लोगो) **तुम इस** (किताब) **पर चलो जो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से आई है** (यानी इसे दिल से सच्चा समझो और इस के हुक्मों पर चलो) **और अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर** (जिस ने तुम्हारी हिदायत के लिए कुरआन उतारा) **दूसरे दोस्तों के पीछे मत चलो** (जो तुम को गुमराह करते हैं जैसे शैतान जिन्नात और इन्सान, मगर समझाने के बावजूद) **तुम लोग बहुत ही कम नसीहत मानते हो**(03) **और कितनी ही बस्तियां हैं कि उन** (के रहने वालों) **को** (उन के कुफ़्र और झुटलाने की वजह से) **हम ने तबाह व बर्बाद कर दिया और उन पर हमारा अज़ाब** (या तो) **रात के वक़्त पहुंचा** (जो सोने आराम करने का वक़्त है) **या ऐसे वक़्त** (आया) **जब वो दोपहर के वक़्त आराम में थे** (यानी किसी को किसी वक़्त किसी को किसी वक़्त)(04) **तो जिस वक़्त उन पर हमारा**

अज़ाब आया उस वक़्त उन के मुंह से सिवाए इस के और कोई बात न निकलती थी कि सचमुच हम ज़ालिम (और कुसूरवार) **थे** (यानी ऐसे वक़्त ग़लती का इक़रार किया जब कि तौबा का वक़्त निकल चुका था)(05) **फिर** (दुनिया के अज़ाब के बाद क़ियामत में) **हम उन लोगों से** (भी) **ज़रूर पूछेंगे जिन के पास पैग़म्बर भेजे गये थे** (कि तुम ने पैग़म्बरों का कहना माना या नहीं) **और हम पैग़म्बरों से ज़रूर पूछेंगे** (कि तुम्हारी उम्मतों ने तुम्हारा कहना माना या नहीं)(06) **फिर चूंकि हम पूरी ख़बर रखते हैं ख़ुद ही** (सब के सामने उन के किये कामों को) **बयान कर देंगे और हम** (काम के वक़्त और जगह से) **ग़ाइब तो न थे**(07)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला मुझ से पूछेंगे कि क्या मैंने अल्लाह तआ़ला का पैग़ाम बन्दों को पहुंचा दिया और मैं जवाब में कहूंगा कि मैंने पहुंचा दिया है इसलिए तुम सब इस का ध्यान रक्खों कि जो लोग यहां मौजूद हैं वो दूसरे लोगों तक मेरा पैग़ाम पहुंचा दें। (मज़हरी)

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ۨ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۞ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۞ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ۞

आयत नं० 08 से 10

और उस दिन (यानी क़ियामत के दिन अच्छे बुरे कामों व अक़ीदों को) **तौला जाना एक सच्चाई है** (ताकि आ़म लोगों में हर एक की हालत का पता चल जाए), **फिर** (तौले जाने के बाद) **जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **भारी होगा** (यानी वो मोमिन होगा) **सो ऐसे लोग** (तो) **कामयाब होंगे** (यानी बख़्शे जाएंगे)(08) **और जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **हल्का होगा** (यानी वो काफ़िर होगा) **तो ये लोग वो होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया** (यानी दोज़ख़ उन का ठिकाना है) **इस वजह से कि हमारी आयतों का हक़ अदा नहीं किया करते थे**(09) **और बेशक हम ने तुम को ज़मीन पर रहने की जगह दी और हम ने तुम्हारे लिए इस** (ज़मीन) **में ज़िन्दगी का सामान पैदा किया,** (तो चाहिए तो यह था कि तुम उस के शुक्रिये में ताबेदार होते लेकिन) **तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो** (क्योंकि थोड़ा बहुत नेक काम तो अक्सर लोग कर ही लेते हैं

लेकिन ईमान न होने की वजह से वो क़ुबूल नहीं होता)(10)।

नोटः- एक हदीस में है कि जब नूह अलैहिस्सलाम की वफ़ात का वक़्त आया तो अपने लड़कों को जमा करके कहा कि मैं तुम्हें कलिमाए "ला इलाहा इल्लल्लाह" की वसीयत करता हूं क्योंकि अगर सातों आसमान और ज़मीन एक पल्ले में और कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह दूसरे पल्ले में रख दिया जाए तो कलिमा का पल्ला ही भारी रहेगा। (मज़हरी)

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝١١
قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝١٢ قَالَ
فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝١٣ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٤
قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝١٥ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝١٦ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ
بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝١٧ قَالَ اخْرُجْ
مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝١٨

आयत नं० 11 से 18

और हम ने तुम को पैदा (करने का सामान शुरू) **किया** (यानी आदम अलैहिस्सलाम को बनाया जिससे तुम सब लोग हो) **फिर हम ने तुम्हारी** (यानी आदम अलैहिस्सलाम की) **सूरत बनाई** (फिर वो ही सूरत उन की औलाद में चली आ रही है) **फिर** (जब आदम अलैहिस्सलाम बन गये तो) **हम ने फ़रिशतों से कहा कि आदम को** (अब) **सजदा करो तो सब फ़रिशतों ने सजदा किया सिवाए इबलीस के, कि वो सजदा करने वालों में शामिल नहीं हुआ(11) अल्लाह तआला ने कहा तुझ को सजदे से किस चीज़ ने रोका जब कि मैं** (ख़ुद) **तुझ को** (सजदे का) **हुक्म दे चुका, कहने लगा** (वो रूकावट यह है कि) **मैं उस** (आदम) **से बेहतर हूं** (क्योंकि) **आप ने मुझ को आग से पैदा किया और उस** (आदम) **को आप ने मिट्टी से पैदा किया है** (यह शैतानी दलील है जिससे आग को मिट्टी से बेहतर साबित करके ख़ुद को आदम अलैहिस्सलाम से बड़ा साबित करना चाहा)(12) **अल्लाह तआला ने कहा** (जब तू ऐसा नाफ़रमान है) **तो आसमान से नीचे उतर तुझ को कोई हक़ नहीं पहुंचता कि तू घमन्ड करे** (ख़ास कर) **आसमान में रह कर** (जहां सब

ताबेदारों ही की जगह है) **तू** (यहां से) **निकल** (दूर हो) **बेशक तू** (इस घमन्ड की वजह से) **ज़लीलों में गिना जाने लगा(13) वो कहने लगा मुझ को** (ज़िन्दा रहने की) **मोहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक(14) अल्लाह तआ़ला ने कहा तुझ को मोहलत दी गई(15) वो कहने लगा कि इस वजह से कि आपने मुझ को गुमराह किया है** (क्योंकि अल्लाह तआ़ला के हुक्म के बिना कुछ हो नहीं सकता और जैसा इरादा हो भलाई या बुराई का वैसा ही हुक्म हो जाता है) **मैं क़सम खाता हूं कि मैं** (भी) **उन** (इन्सानों के बहकाने) **के लिए आप की सीधी राह पर** (जो कि सच्चा दीन है जाकर) **बैठ जाउंगा(16) फिर उन पर** (हर चार तरफ़ से) **हमला करूंगा उन के आगे से भी पीछे से भी और उन की दाहिनी तरफ़ से भी और बाई तरफ़ से भी** (यानी उन को बहकाने की पूरी कोशिश करूंगा ताकि वो आप की इबादत न करने पाएं), **और** (मैं अपनी कोशिश में कामयाब हूंगा कि) **आप उनमें से ज़्यादा लोगों को** (आप की नेमतों का) **अहसान मानने वाला न पाएंगे(17) अल्लाह तआ़ला ने कहा कि यहां** (आसमान) **से ज़लील और मरदूद हो कर निकल जा,** (और) **जो आदमी उन में से तेरा कहना मानेगा मैं ज़रूर तुम से** (यानी इबलीस और उस की बात मानने वालों से) **दोज़ख़ को भर दूंगा(18)।**

नोटः- दुनिया में तो काफ़िर की दुआ भी क़ुबूल हो सकती है मगर आख़रत में काफ़िर की दुआ़ क़ुबूल न होगी।

وَ يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَ لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩
فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَ قَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ
الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝٢٠ وَ قَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٢١
فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ طَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَ
نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَ اَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٢٢ قَالَا رَبَّنَا
ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٢٣ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ
لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝٢٤ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَ مِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ۝٢٥

आयत नं० 19 से 25

और (हम ने हुक्म दिया कि) **ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीवी** (हव्वा) **जन्नत में रहो फिर जिस जगह से चाहो** (और जिस चीज़ को चाहो) **दोनों खाओ और** (इतना ध्यान रहे कि) **इस** (ख़ास) **पेड़ के पास** (भी) **मत जाना** (यानी इस का फल न खाओ) **वर्ना तुम नुक़्सान उठाने वालों में हो जाओगे(19) फिर शैतान ने उन दोनो के दिल में वसवसा डाला** (यानी उन को बहकाया) **ताकि** (उन को उस मना किये हुए पेड़ से खिला कर) **उन का पर्दे का बदन जो एक दूसरे से छुपा था दोनों के सामने बेपर्दा कर दे** (क्योंकि उस पेड़ के खाने का ये ही असर है) **और** (वो वसवसा यह था कि दोनों से) **कहने लगा कि तुम्हारे रब ने तुम दोनों को इस पेड़** (के खाने) **से किसी वजह से मना नहीं किया मगर सिर्फ़ इस वजह से कि तुम दोनों** (इस को खाकर) **कहीं फ़रिशता न बन जाओ या कहीं सदा ज़िन्दा रहने वालों में से न हो जाओ** (और शुरू में आप इस को खाने की सहार नहीं रखते थे इसलिए मना कर दिया था अब सहार कर सकते हो अब मनाही नहीं रही)**(20) और उन दोनो के सामने** (इस बात पर) **क़सम खाली कि यक़ीन जानिए मैं आप दोनों का** (दिल से) **भला चाहने वाला हूं(21) तो** (ऐसी बातें बनाकर) **उन दोनों को धोके से नीचे ले आया बस उन दोनों ने जो** (उस) **पेड़** (के फल) **को चक्खा** (फ़ौरन) **उन दोनों का पर्दे का बदन एक दूसरे के सामने खुल गया** (यानी जन्नत का लिबास उतर गया और दोनों शर्मा गये) **और** (बदन छुपाने के लिए) **दोनों अपने** (बदन के) **ऊपर जन्नत के** (पेड़ों के) **पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे, और** (उस वक़्त) **उन के रब ने उन को पुकारा** (और कहा) **क्या मैं तुम दोनों को इस पेड़** (के खाने) **से मना न कर चुका था और यह बता चुका था कि शैतान तुम्हारा खुला दुशमन है** (उस के बहकाने से बचते रहना)**(22) दोनों कहने लगे कि या रब हमारे हमने अपना बड़ा नुक़सान किया** (कि पूरी होशियारी से काम न लिया)**, और अगर आप हमें मुआफ़ न करेंगे और हम पर रहम न करेंगे तो सचमुच हम बड़े नुक़सान में पड़ जाएंगे(23) अल्लाह तआ़ला ने** (आदम व हव्वा अ़लैहिमुस्सलाम से) **कहा कि** (जन्नत से) **नीचे** (ज़मीन पर) **ऐसी हालत में जाओ कि तुम** (यानी तुम्हारी औलाद) **आपस में कुछ** (लोग) **कुछ के दुशमन रहोगे, और तुम्हारे वास्ते ज़मीन रहने की जगह** (तय की गई) **है और** (रोज़गार के सामान से) **नफ़ा उठाना** (तय किया गया) **है एक ख़ास वक़्त** (तक यानी मौत के वक़्त) **तक(24)** (और यह भी) **कहा कि तुम को वहां ही ज़िन्दगी बसर करना है और वहां ही मरना है और उसी में से** (क़ियामत के दिन) **फिर ज़िन्दा हो कर निकलना है(25)।**

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝٢٦ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا
لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ۝٢٧ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ
بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٢٨ قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۟ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۬ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝٢٩ فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ
اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٣٠ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٣١

आयत नं० 26 से 31

ऐ आदम की औलाद (एक हमारा इनआम यह है कि) **हम ने तुम्हारे लिए लिबास पैदा किया जो तुम्हारे पर्दे वाले बदन को भी छुपाता है और** (तुम्हारे बदन की हिफ़ाज़त और) **सजावट का सामान भी है, और तक़्वा** (यानी दीनदारी) **का जो लिबास है वो सब से बढ़ कर** (ज़रूरी) **है, यह** (लिबास पैदा करना) **अल्लाह तआ़ला की** (महरबानियों की) **निशानियों में से है ताकि ये लोग** (इस नेमत को) **याद रक्खें** (और याद रख कर देने वाले का हक़ पहचानें और दीन की राह चलें)(26) **ऐ आदम की औलाद! शैतान तुम को किसी ख़राबी में न डाल दे** (कि दीन और तक़्वे के ख़िलाफ़ तुम से कोई काम करा दे) **जैसा उस ने तुम्हारे दादा दादी** (यानी आदम व हव्वा अलैहिमुस्सलाम) **को जन्नत से बाहर करा दिया** (यानी उन से ऐसा काम करा दिया जिस के नतीजे में वो जन्नत से बाहर हो गये और बाहर भी) **ऐसी हालत से** (कराया) **कि उन का लिबास भी उन** (के बदन) **से उतरवा दिया ताकि दोनों को एक दूसरे के पर्दे का बदन दिखाई देने लगे** (जो शरीफ़ इन्सान के लिए बड़ी शर्म व रूसवाई की बात है, और उससे होशियार रहना इसलिए भी ज़रूरी है कि) **वो और उस का गिरोह तुम को ऐसी तरह देखता है जहां से तुम उन को** (आम हालात में) **नहीं देख सकते, हम शैतानों को उन्हीं का दोस्त होने देते हैं जो ईमान नहीं लाते** (अगर बिल्कुल ईमान नहीं तो पूरी तरह शैतान उस पर हावी हो जाता है और अगर ईमान तो है मगर कमज़ोर है तो उस से कम दर्जे का हावी होता है जब कि पक्के मोमिन पर शैतान का बिल्कुल

क़ाबू नहीं चलता)(27) **और वो** (काफ़िर) **लोग जब कोई बेहयाई का काम करते हैं** (यानी ऐसा काम जिस की बुराई खुली हुई हो और इन्सानी समाज में उस को बुरा समझा जाता हो जैसे नंगे हो कर तवाफ़ करना जो कि जहालत के ज़माने की रस्म थी) **तो कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह तआ़ला ने भी हम को ये ही बताया है,** (ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला बेहयाई का हुक्म नहीं दिया करते, क्या** (ऐसा दावा करके) **अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बातें लगाते हो जिस की तुम कोई सनद नहीं रखते**(28) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि मेरे रब ने हुक्म दिया है इन्साफ़ करने का, और यह कि तुम हर सजदा** (यानी इबादत) **के वक़्त अपना मुंह सीधा** (अल्लाह की तरफ़) **रक्खा करो** (यानी किसी दूसरे को भी उस की इबादत में साझी न करो) **और अल्लाह की इबादत ऐसे करो कि उस इबादत को ख़ालिस अल्लाह ही के वास्ते रक्खा करो, तुम को अल्लाह तआ़ला ने जिस तरह शुरू में पैदा किया था उसी तरह तुम** (एक वक़्त) **फिर दोबारा पैदा होंगे**(29) **कुछ लोगों को अल्लाह तआ़ला ने** (दुनिया में) **सीधी राह पर रक्खा है** (उन को उस वक़्त अच्छा बदला मिलेगा) **और कुछ पर गुमराही छा गई है** (उन को सज़ा मिलेगी), **उन लोगों ने शैतानों को अपना दोस्त बना लिया है अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर और समझते हैं कि वो सीधे रास्ते पर हैं**(30) **ऐ आदम की औलाद तुम मस्जिद की हर हाज़िरी के वक़्त** (नमाज़ के लिए हो या तवाफ़ के लिए) **अपना लिबास पहन लिया करो और** (हलाल चीज़ों को नाजाइज़ न समझो बल्कि) **ख़ूब खाओ और पियो और शरीअ़त की हद से मत निकलो, बेशक अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं करते हद से निकल जाने वालों को**(31)।

नोटः- एक हदीस में है कि “जिस मकान में औरत नंगे सर हो वहां नेकी के फ़रिशते नहीं आते” तो जब अपने घरों में नंगे सर रहने का इतना बड़ा वबाल है तो ग़ैर महरम मर्दों के सामने नंगे सर आने का अज़ाब कितना बड़ा होगा। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَ الطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ
مَا بَطَنَ وَ الْاِثْمَ وَ الْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ اَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّ اَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا

تَعۡلَمُوۡنَ ۝۳۳ وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ لَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ۝۳۴

आयत नं० 32 से 34

(जो लोग अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों जैसे खाने पीने और पहनने की चीज़ों को बिना दलील हराम समझ रहे हैं उन से) **आप कह दीजिए कि** (यह बताओ) **अल्लाह तआ़ला के पैदा किये हुए कपड़ों को जो उस ने अपने बन्दों के** (बरतने के) **वास्ते बनाए हैं और खाने पीने की हलाल चीज़ों को** (जिन को अल्लाह ने हलाल रक्खा है) **किस ने हराम किया** (है यानी हराम व हलाल ठहराना तो अल्लाह का काम) **है, आप उन से यह** (भी) **कह दीजिए कि ये नेमतें जो दुनिया में उन को मिली हैं क़ियामत के दिन ख़ालिस ईमान वालों के लिए होंगी** (भले ही काफ़िरों ने दुनिया में ऐश से बसर की मगर वहां ये चीज़ें अ़ज़ाब बन जाएंगी)**, हम इसी तरह सभी आयतों को समझदारों के लिए साफ़-साफ़ बयान करते हैं(32) आप** (इन से यह भी) **कह दीजिए कि** (तुम ने जिन हलाल चीज़ों को बिना वजह हराम समझ रक्खा है वो तो अल्लाह ने हराम नहीं की मगर) **मेरे रब ने सिर्फ़** (उन चीज़ों को) **हराम किया है** (जैसे) **सभी बेहयाई की बातें उनमें जो खुली हैं वो भी** (जैसे नंगे होकर तवाफ़ करना) **और उनमें जो छुपी हैं वो भी** (जैसे बदकारी) **और हर गुनाह की बात को** (हराम किया है) **और नाहक़ किसी पर ज़ुल्म करने को** (हराम किया है) **और इस बात को** (हराम किया है) **कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी ऐसी चीज़ को** (इबादत में) **साझी ठहराओ जिस की अल्लाह ने कोई सनद** (और दलील) **नहीं उतारी और इस बात को** (हराम किया है) **कि तुम लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो जिस की तुम्हारे पास कोई सनद नहीं(33) और हर क़ौम के लिए** (मोहलत की) **एक मुद्दत तय है, बस जब वो तय वक़्त आ जाता है तो वो घड़ी भर भी उससे आगे पीछे नहीं हो सकते** (और अ़ज़ाब में पकड़ लिए जाते हैं और अगर दुनिया में अ़ज़ाब न आया तो मरते ही अ़ज़ाब में दाख़िल हो जाते हैं)(34)।

يٰبَنِيۡۤ اٰدَمَ اِمَّا يَاۡتِيَنَّكُمۡ رُسُلٌ مِّنۡكُمۡ يَقُصُّوۡنَ عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِيۡ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَ اَصۡلَحَ فَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ
يَحۡزَنُوۡنَ ۝۳۵ وَالَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَاسۡتَكۡبَرُوۡا عَنۡهَاۤ اُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ۝۳۶ فَمَنۡ اَظۡلَمُ
مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓـئِكَ يَنَالُهُمۡ نَصِيۡبُهُمۡ مِّنَ الۡكِتٰبِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتۡهُمۡ

رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَ شَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ
اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۬ؕ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَ قَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ
عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾ ع

आयत नं० 35 से 39

(और अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को पैदा करते वक़्त ही सब रूहों को जमा करके यह कह दिया था कि) **ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास पैग़म्बर आएं जो तुम ही में से होंगे जो मेरे हुक्म तुम से बयान करेंगें तो** (उन के आने पर) **जो आदमी** (तुम में से उन आयतों को झुटलाने से) **परहेज़ रक्खे और** (अपने कामों का) **सुधार करे** (मतलब यह कि पूरी तरह कहना माने) **तो उन लोगों पर** (आख़रत में) **न कुछ डर** (की बात होने वाली) **है और न उन को कोई ग़म होगा(35) और जो लोग** (तुम में से) **हमारे इन हुक्मों को झूटा बताएंगे और उन** (के मानने) **से घमन्ड करेंगे वो लोग दोज़ख़** (में रहने) **वाले होंगे,** (और) **वो उसमें सदा-सदा रहेंगे(36) उस आदमी से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआ़ला पर झूट बान्धे** (यानी जो बात अल्लाह की कही हुई न हो उस को अल्लाह की कही हुई कहे) **या उस की आयतों को झूटा बताए** (यानी जो बात अल्लाह की कही हो उस को बेकही बताए), **उन लोगों के नसीब का जितना हिस्सा** (रोज़ी और उम्र का) **है वो तो उन को** (दुनिया में) **मिल जाएगा** (लेकिन आख़रत में मुसीबत ही मुसीबत है), **यहां तक कि** (मरने के वक़्त) **जब उन के पास हमारे भेजे हुए फ़रिशते उन की जान लेने आएंगें तो** (उन से) **कहेंगे कि** (कहो) **वो कहां गये जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत किया करते थे** (अब इस मुसीबत में क्यों नहीं काम आते), **वो** (काफ़िर) **कहेंगे कि हम से सब गुम हो गये** (यानी सचमुच कोई काम नहीं आया) **और** (उस वक़्त) **अपने काफ़िर होने का इक़रार करने लगेंगे** (लेकिन उस वक़्त का इक़रार बेकार होगा)(37) **अल्लाह तआ़ला कहेंगे जो गिरोह** (काफ़िरों के) **तुम से पहले हो चुके हैं जिन्नात में से भी और इन्सानों में से भी उन के साथ तुम भी दोज़ख़ में जाओ** (बस आगे पीछे सब काफ़िर उस में दाख़िल होंगे, और) **जिस वक़्त भी कोई गिरोह** (काफ़िरों का दोज़ख़ में) **दाख़िल होगा अपने जैसे दूसरे गिरोह को लानत करेगा** (यानी

आपस में हमदर्दी न होगी), **यहां तक कि जब उस** (दोज़ख़) **में सब जमा हो जाएंगे तो** (उस वक़्त) **बाद वाले लोग** (जो कुफ़्र में दूसरों के कहने पर चले थे) **पहले** (दाख़िल होने वाले सरदार) **लोगों के बारे में कहेंगे कि या रब हमारे हम को इन लोगों ने गुमराह किया था सो इन को दोज़ख़ का अज़ाब** (हम से) **दो गुना दीजिए,** (अल्लाह तआला) **कहेंगे कि** (इससे तुम को क्या तसल्ली होगी, बस) **सब ही का** (अज़ाब) **दो गुना है लेकिन** (अभी) **तुम को** (पूरी) **ख़बर** (नहीं क्योंकि अभी तो अज़ाब शुरू हुआ है इस को बढ़ते देखा) **नहीं(38) और पहले** (दाख़िल होने वाले) **लोग बाद** (में दाख़िल होने) **वाले लोगों से** (अल्लाह तआला के इस जवाब को सुन कर) **कहेंगे** (जब सब की सज़ा की यह हालत है तो) **फिर तुम को हम पर** (अज़ाब की कमी के बारे में) **कोई बड़ाई** (और सहूलत) **नहीं** (क्योंकि कमी न तुम को न हम को) **सो तुम भी अपने** (बुरे) **कामों के बदले में अज़ाब का मज़ा चखते रहो(39)।**

اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ اسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَ لَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ
الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ۝۴۰ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّ مِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ؕ وَ
كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝۴۱ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَاۤ ۫ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۴۲ وَ نَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
هَدٰىنَا لِهٰذَا ۫ وَ مَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْ لَاۤ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَ نُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ
الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۴۳

आयत नं० 40 से 43

जो लोग हमारी आयतों को झूटा बताते हैं और उन के मानने से घमन्ड करते (हुए मुंह मोड़ते) **हैं उन** (के मरने के बाद उन की रूह के ऊपर चढ़ने) **के लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएंगे** (यह हालत तो मरने के बाद हुई) **और** (क़ियामत के दिन) **वो लोग कभी जन्नत में न जाएंगे जब तक ऊंट सूई के छेद के अन्दर से न चला जाए** (और यह हो नहीं सकता तो वो भी जन्नत में नहीं जा सकते), **और हम ऐसे मुजरिम लोगों को ऐसी ही सज़ा देते हैं** (यानी हमें कोई दुशमनी न थी जैसा किया वैसा भुगता)(40) **उन के लिए दोज़ख़** (की आग) **का बिछोना होगा और उन के ऊपर उसी का ओढ़ना होगा, और हम ऐसे ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते**

हैं(41) और जो लोग (अल्लाह की आयतों पर) **ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये** (और ये नेक काम कुछ भी मुश्किल नहीं क्योंकि) **हम किसी आदमी को उस की ताक़त से ज़्यादा कोई काम नहीं बताते** (तो) **ऐसे लोग जन्नत** (में जाने) **वाले हैं,** (और) **वो उसमें सदा-सदा रहेंगे(42) और जो कुछ उन के दिलों में** (एक दूसरे से) **नाराज़गी थी हम उस को** (भी) **दूर कर देंगे** (कि आपस में प्यार मुहब्बत से रहेंगे और) **उन के** (मकानों के) **नीचें नहरें बहती होंगी, और वो लोग** (बहुत ख़ुश होकर) **कहेंगे अल्लाह तआ़ला का** (लाख-लाख) **अहसान है जिस ने हम को इस जगह तक पहुंचाया, और हम कभी** (यहां तक) **न पहुंचते अगर अल्लाह तआ़ला हम को न पहुंचाते** (इस में यह भी आ गया कि यहां तक पहुंचने का जो तरीक़ा था ईमान और नेक काम वो हम को बताया और उस पर चलने की तौफ़ीक़ दी)**, सचमुच हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची बातें लेकर आए थे** (बस उन्होंने जिन कामों पर जन्नत का वादा किया था वो सच्चा साबित हुआ)**, और उन से पुकार कर कहा जाएगा कि यह जन्नत तुम को दी गई है तुम्हारे** (नेक) **कामों के बदले(43)।**

नोटः- हज़रत अली रज़ि० ने एक बार फ़रमाया कि हम उस्मान तलहा और ज़ुबैर उन्हीं लोगों में से होंगे जिन के सीने जन्नत में दाख़िल होने से पहले कदूरतों से पाक साफ़ कर दिये जाएगें।
(इब्ने कसीर)

وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ
حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَیْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِیْنَ ۙ﴿۴۴﴾ الَّذِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ
یَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ بَیْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَ عَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ یَّعْرِفُوْنَ كُلًّۢا
بِسِیْمٰىهُمْ ۚ وَ نَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ ۫ لَمْ یَدْخُلُوْهَا وَ هُمْ یَطْمَعُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ
تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۴۷﴾ وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا
یَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِیْمٰىهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِیْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا
یَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَیْكُمْ وَ لَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿۴۹﴾

आयत नं० 44 से 49

और (जब जन्नत वाले जन्नत में पहुच जाएंगे उस वक़्त वो) **जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को** (अपनी हालत पर ख़ुशी दिखाने और उन का पछतावा बढ़ाने को) **पुकार कर कहेगे कि हम से जो हमारे रब ने वादा किया था** (कि ईमान लाने और नेक काम करने से जन्नत देंगे) **हम ने उस को बिल्कुल सच्चा पाया तो** (तुम बताओ कि) **तुम से जो तुम्हारे रब ने वादा किया था** (कि कुफ़्र की वजह से दोज़ख़ में जाओगे) **तुम ने भी उसे सच्चा पाया** (यानी अब तो असलीयत पता चल गई), **वो** (दोज़ख़ वाले जवाब में) **कहेंगे हां** (सचमुच सब बातें अल्लाह व रसूल की ठीक निकलीं) **फिर** (उन दोज़ख़ियों का पछतावा और जन्नतियों की ख़ुशी बढ़ाने को) **एक पुकारने वाला** (यानी कोई फ़रिशता) **दोनो** (फ़रीक़) **के बीच में** (खड़ा होकर) **पुकारेगा कि अल्लाह तआ़ला की मार हो** (उन) **ज़ालिमों पर(44) जो अल्लाह की राह** (यानी सच्चे दीन) **से मुंह फेरते थे और** (सच्चे दीन) **में** (सदा अपनी समझ से) **कमी** (की बातें) **तलाश करते थे** (कि उसमें ऐब निकालें), **और वो लोग आख़िरत का भी इनकार करते थे** (जिस का नतीजा आज भुगत रहे हैं)(45) **और उन दोनो** (गिरोह यानी जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों) **के बीच दीवार होगी** (जिस के आर पार दिखाई देगा और आवाज़ भी सुनाई देगी मगर दोज़ख़ का असर जन्नत तक और जन्नत का असर दोज़ख़ तक न जाने देगी जिस के ऊपर वाले हिस्से का नाम आराफ़ है), **और** (इस पर से जन्नती व दोज़ख़ी सब नज़र आएंगे और) **आराफ़ के ऊपर बहुत से आदमी होंगे** (जिन की नेकियां और बुराइयां बराबर होंगी) **वो लोग** (जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों में से) **हर एक को उन की निशानी से पहचानेंगे, और ये** (आराफ़ वाले) **जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे अस्सलामु अलैकुम, अभी ये आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे और इस के उम्मीदवार होंगे** (हदीस में आया है कि उन की उम्मीद पूरी कर दी जाएगी और जन्नत में जाने का हुक्म हो जाएगा)(46) **और जब उन की आंखें दोंज़ख़ वालों की तरफ़ फिरेंगी** (उस वक़्त घबरा कर) **कहेंगे या रब हमारे हम को इन ज़ालिम लोगों के साथ** (अ़ज़ाब में) **शामिल न कीजिए(47) और आराफ़ वाले** (दोज़ख़ियों में से) **बहुत से आदमियों को उन की निशानी से पहचानेंगे** (कि ये काफ़िर हैं और) **पुकार कहेंगे कि तुम्हारा गिरोह और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना** (और पैग़म्बरों की बात न मानना) **तुम्हारे कुछ काम न आया(48)** (और इसी घमन्ड की वजह से मुसलमानों को गिरा हुआ समझते थे तो अब देखो) **क्या ये** (जो जन्नत में ऐश कर रहे हैं) **वो ही** (मुसलमान) **हैं जिन के बारे में तुम क़समें खा खा कर कहा करते थे कि उन पर अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत न करेगा,** (तो उन पर

तो इतनी बड़ी रहमत हुई कि) **उन को यह हुक्म हो गया कि जाओ जन्नत में** (जहां) **तुम को न किसी चीज़ का डर होगा और न कोई ग़म होगा(49)।**

وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۰﴾ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّ لَعِبًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا
لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَ مَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَ لَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّ رَحْمَةً
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَاۤ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْۤا
اَنْفُسَهُمْ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ
اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ وَ النُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا
لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾

आयत नं० 50 से 54

और दोज़ख़ वाले (भूक प्यास से बेदम होकर) **जन्नत वालों को पुकार कहेंगे अल्लाह के वास्ते हमारे ऊपर थोड़ा पानी ही डाल दो** (शायद कुछ चैन मिल जाए) **या और ही कुछ देदो जो अल्लाह तआ़ला ने तुम को दे रक्खा है, जन्नत वाले** (जवाब में) **कहेंगे कि अल्लाह ने** (जन्नत की खाने और पीने) **दोनों चीज़ों की काफ़िरों के लिए रोक लगा रक्खी है(50) जिन्होंने दुनिया में अपने दीन को** (जिस का मानना उन के लिए ज़रूरी था) **खेल तमाशा बना रक्खा था और जिन को दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके** (और भूल) **में डाल रक्खा था,** (सो जब दुनिया में उन की यह हालत थी) **तो** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं) **हम भी आज** (क़ियामत) **के दिन उन का नाम न लेंगे** (और खाना पीना कुछ न देंगे) **जैसा उन्होंने इस** (बड़े) **दिन का नाम तक न लिया और जैसा ये हमारी आयतों का इनकार किया करते थे(51) और हम ने उन उन लोगों के पास एक ऐसी किताब पहुंचा दी है** (यानी क़ुरआन) **जिस को हम ने अपने इल्म से बहुत ही साफ़-साफ़ करके बयान कर दिया है** (और यह बयान सब को सुनाने को किया है लेकिन) **हिदायत** (का सामान) **और रहमत उन** (ही) **लोगों के लिए** (हुआ) **है जो** (इस को सुन कर) **ईमान ले**

आते हैं(52) (और जो फिर भी ईमान नहीं लाते तो ऐसा लगता है कि) **उन लोगों को और किसी बात का इन्तिज़ार नहीं सिर्फ़ इस** (कुरआन) **के बताए हुए आख़री नतीजे** (यानी सज़ा के वादे) **का इन्तिज़ार है,** (सो) **जिस दिन इस का** (बताया हुआ) **आख़री नतीजा सामने आएगा उस दिन जो लोग इस को पहले से भूले हुए थे** (बेचैन हो कर यह) **कहने लगेंगे सचमुच हमारे रब के पैग़म्बर** (दुनिया में) **सच्ची-सच्ची बातें लाए थे** (मगर हम से नासमझी हुई)**, सो अब क्या कोई हमारा सिफ़ारिशी है कि हमारी सिफ़ारिश कर दे या क्या हम फिर** (दुनिया में) **वापस भेजे जा सकते हैं ताकि हम लोग** (फिर दुनिया में जाकर) **इन** (बुरे) **कामों के बजाए जिन को हम किया करते थे दूसरे** (नेक) **काम करें,** (अल्लाह तआला कहते हैं कि अब कोई छुटकारे की सूरत नहीं) **बेशक उन लोगों ने अपने को** (कुफ़्र के) **नुक़सान में डाल दिया और ये जो कुछ घड़ा करते थे** (इस वक़्त) **सब ग़ाइब हो गया** (अब सिवाए सज़ा के और कुछ न होगा)(53) **बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया फिर अर्श पर** (जो शाही कुर्सी जैसा है इस तरह) **क़ाइम** (और जलवा फ़रमा) **हुआ** (जो कि उस की शान के लाइक़ है)**, छुपा देता है रात** (के अन्धेरों) **से दिन** (की रौशनी) **को इस तरह कि वो रात दिन को जल्दी से आ लेती है** (यानी दिन बहुत जल्दी बीतता हुआ लगता है यहां तक कि अचानक रात आ जाती है) **और सूरज और चान्द और दूसरे सितारों को पैदा किया इस तरह कि सब उस के हुक्म के पाबन्द हैं, याद रक्खो कि पैदा करना और हुक्म देना सब उसी का काम है, बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो सारे जहानों का रब है**(54)।

नोटः- अल्लाह तआला के अर्श पर क़ाइम होने का क्या मतलब है इस की खोजबीन में पड़ने को मना किया गया है क्योंकि इन्सान की अक्ल इस को समझ नहीं सकती बस इस पर ईमान लाना वाजिब है।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۚ﴿۵۵﴾ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا
وَّ طَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى
اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ
الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ
كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿۵۸﴾ؑ

आयत नं० 55 से 58

तुम लोग (हर हालत में और हर ज़रूरत में) **अपने रब से दुआ किया करो गिड़गिड़ाते हुए भी और चुपके-चुपके भी, बेशक अल्लाह तआ़ला** (दुआ़ में अदब की) **हद से बढ़ जाने वालों** (यानी बेजा दुआ़ मांगने वालों) **को पसन्द नहीं करते(55) और दुनिया में फ़साद न फैलाओ जब कि** (पैग़म्बरों के वास्ते से) **इस का सुधार कर दिया गया है और पुकारो उस को** (अ़ज़ाब के) **डर और** (रहमत की) **उम्मीद के साथ, बेशक अल्लाह की रहमत नज़दीक है नेक लोगों के(56) और वो** (अल्लाह) **ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वो** (बारिश की उम्मीद दिला कर दिल को) **ख़ुश कर देती हैं, यहां तक कि जब वो हवाएं भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उस बादल को किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ हांक ले जाते हैं फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से हर क़िस्म के फल निकालते हैं,** (इससे साबित होता है कि) **इसी तरह** (क़ियामत के दिन) **हम मुर्दों को** (ज़मीन से) **निकाल खड़ा करेंगे** (यह सब इसलिए सुनाया) **ताकि तुम समझो(57) और** (कुरआन और पैग़म्बर की हिदायत यूं तो सब के लिए आम है मगर इससे फ़ाइदा उठाने वाले कम लोग होते हैं जैसे बारिश तो हर ज़मीन पर बरसती है मगर खेती और पेड़ हर जगह नहीं पैदा होते बस) **जो ज़मीन अच्छी होती है उस की पैदावार तो अल्लाह के हुक्म से बहुत होती है, और जो ख़राब है उस की पैदावार** (अगर हुई भी तो) **बहुत कम होती है, इसी तरह हम दलीलों को तरह-तरह से बयान करते रहते हैं** (मगर वो सब) **उन** (ही) **लोगों के लिए** (नफ़ा देने वाली होती हैं) **जो** (उन की) **क़द्र करते हैं(58)।**

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत में दो बार सूर फूंका जाएगा पहले सूर पर सारी दुनिया फ़ना हो जाएगी कोई चीज़ ज़िन्दा बाक़ी न रहेगी और दूसरे सूर पर फिर से नये सिरे से दुनिया पैदा हो जाएगी और सब मुर्दे ज़िन्दा हो जाएंगे और इन दोनों बार के सूर के बीच में चालीस साल का फ़ासला होगा और इन चालीस सालों में लगातार बारिश होती रहेगी इसी अर्से में हर मुर्दा इन्सान व जानवर के बदन के हिस्से जमा हो कर एक पूरा ढ़ांचा बन जाएगा और दूसरी बार के सूर फूंकने के वक़्त उन लाशों के अन्दर रूह आ जाएगी और सब ज़िन्दा हो कर खड़े हो जाएंगे। (इस रिवायत का अक्सर हिस्सा बुख़ारी व मुस्लिम में मौजूद है कुछ हिस्सा अबूदाऊद से है)।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ۝59 قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝60 قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ
مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝61 اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ اَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝62 اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ
جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَ لِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝63 فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ
الَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ۝64 ع

आयत नं० 59 से 64

हमने नूह (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बना कर) **उन की क़ौम की तरफ़ भेजा तो उन्होंने** (उस क़ौम से) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा माबूद** (होने के क़ाबिल) **नहीं** (और बुतों की पूजा छोड़ दो)**, मुझ को तुम्हारे लिए** (मेरा कहना न मानने की सूरत में) **एक बड़े** (सख़्त) **दिन के अज़ाब का डर** (है कि वो क़ियामत का दिन या तूफ़ान का दिन) **है(59) उन की क़ौम के सरदारों ने कहा कि हम तुम को ग़लती में** (गरिफ़्तार) **देखते हैं(60) उन्होंने** (जवाब में) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम मुझ में तो ज़रा भी ग़लती नहीं लेकिन मैं तो सारे जहानों के रब का** (भेजा हुआ) **पैग़म्बर हूं(61) मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम** (और हुक्म) **पहुंचाता हूं और** (इस पहुंचाने में मेरा कोई दुनिया का लालच नहीं बल्कि सिर्फ़) **तुम्हारा भला चाहता हूं और** (बड़े दिन के अज़ाब से तुम को जो अचम्भा है तो तुम्हारी ग़लती है क्योंकि) **मैं अल्लाह की तरफ़ से उन बातों को जानता हूं जिन का तुम को पता नहीं(62) और** (तुम को मेरे पैग़म्बर होने पर मेरे इन्सान होने की वजह से इनंकार है तो) **क्या तुम इस बात से अचम्भा करते हो कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास एक ऐसे आदमी के वास्ते से जो तुम्हारी ही जिन्स का** (इन्सान) **है कोई नसीहत की बात आ गई ताकि वो आदमी तुम को** (अल्लाह के हुक्म से अज़ाब से) **डराए और ताकि तुम** (उस के डराने से) **डर जाओ और ताकि** (डरने की वजह से मुख़ालफ़त छोड़ दो जिससे) **तुम पर रहम किया जाए(63) तो** (यह सब समझाने के बावजूद भी) **वो लोग उन को झुटलाते ही रहे तो हम ने नूह** (अलैहिस्सलाम) **को और जो लोग उन के साथ किशती में** (सवार) **थे** (उन को तूफ़ान के अज़ाब से) **बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया था उन को हम ने** (तूफ़ान में) **डुबो दिया, बेशक वो लोग अन्धे हो रहे थे** (सच-झूट नफ़ा नुक़सान कुछ न दिखाई देता था)(64)।

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۶۵﴾ قَالَ الْمَلَاُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّ اِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۶﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ
سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۷﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ اَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿۶۸﴾ اَوَ عَجِبْتُمْ
اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ
وَّ زَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَ
نَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ
رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّ غَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْۤ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ
سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۷۱﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ مَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۲﴾ ع

आयत नं० 65 से 72

और हम ने आद क़ौम की तरफ़ उन के (बिरादरी या वतन के) **भाई** (हज़रत) **हूद** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा, उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा ऐ मेरी क़ौम तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद** (होने के क़ाबिल) **नहीं** (और बुतों को पूजना छोड़ दो)**, तो क्या तुम** (ऐसे बड़े गुनाह यानी शिर्क में पड़ कर ख़ुदा के अज़ाब से) **नहीं डरते(65) उन की क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे उन्होंने** (जवाब में) **कहा कि हम तुम को कमसमझी** (की बातों) **में** (पड़ा) **देखते हैं और हम बेशक तुम को झूटे लोगों में से समझते हैं** (यानी अल्लाह की पनाह न तो तौहीद सही मसअला है और न अज़ाब का आना सही है)**(66) उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम मुझ में ज़रा भी कमसमझी नहीं लेकिन** (चूंकि) **सारी दुनिया के रब का भेजा हुआ पैग़म्बर** (हूं उन्होंने मुझे इस काम का हुक्म किया है इस लिए मैं यह काम अन्जाम देता) **हूं(67)** (और) **तुम को अपने रब के पैग़ाम** (और हुक्म) **पहुंचाता हूं और मैं तुम्हारा सच्चा भला चाहने वाला हूं** (क्योंकि ईमान लाने में तुम्हारा ही नफ़ा है)**(68) और** (तुम जो मेरे इन्सान होने से मेरी पैग़म्बरी का इनकार करते हो तो) **क्या तुम इस बात से अचम्भा करते हो कि तुम्हारे रब की तरफ़ तुम्हारे पास एक ऐसे आदमी के वास्ते से जो तुम्हारी ही जिन्स का** (इन्सान) **है कोई नसीहत की बात आ गई ताकि वो आदमी तुम को** (ख़ुदा के अज़ाब से) **डराए** (यानी क्या इन्सान होना पैग़म्बरी में

रूकावट है), **और** (ऐ क़ौम) **तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआ़ला ने तुम को नूह की क़ौम के बाद** (ज़मीन पर) **आबाद किया और डील डौल में तुम को फैलाव** (भी) **ज़्यादा दिया, तो अल्लाह तआ़ला की** (इन) **नेमतों को याद करो** (और याद करके अहसान मानो और कहना मानो) **ताकि तुम को** (हर तरह की) **कामयाबी** (नसीब) **हो(69) वो कहने लगे कि क्या आप हमारे पास इस वास्ते आए हो कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह ही की इबादत किया करें और जिन** (बुतों) **को हमारे बाप दादा पूजते थे हम उन** (की इबादत) **को छोड़ दें** (यानी हम ऐसा न करेंगे) **बस हम को** (न मानने पर) **जिस अज़ाब की धमकी देते हो उस** (अज़ाब) **को हमारे पास मंगवा दो अगर तुम सच्चे हो(70) उन्होंने कहा कि** (तुम्हारी बग़ावत की जब यह हालत है तो) **बस अब तुम पर अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब और गुस्सा आया ही चाहता है, क्या तुम मुझ से ऐसे** (बेअसल) **नामों के बारे में झगड़ते हो जिन को तुम ने और तुम्हारे बाप दादों ने** (आप ही) **ठहरा लिया है** (लेकिन) **उन के माबूद होने की अल्लाह तआ़ला ने कोई दलील नहीं भेजी, सो तुम** (अब बहस ख़त्म करो और अल्लाह के अज़ाब का) **इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूं(71) बस** (अज़ाब आया और) **हम ने उन को** (यानी हूद अलैहिस्सलाम को) **और उन के** (मोमिन) **साथियों को अपनी रहमत** (व महरबानी) **से** (उस अज़ाब से) **बचा लिया और उन लोगों की जड़ तक काट दी** (यानी बिल्कुल हलाक कर दिया) **जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था और वो** (सख़्त दिली की वजह से) **ईमान लाने वाले नहीं थे** (यानी अगर हलाक न होते जब भी ईमान न लाते)(72)।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۘ قَالَ يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن
رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝٧٣ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا
وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۚ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝٧٤ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ قَالُوا إِنَّا
بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝٧٥ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنتُم بِهِ كَافِرُونَ ۝٧٦ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَٰصَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝٧٧ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي

دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ وَ لٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ
النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

आयत नं० 73 से 79

और हम ने समूद क़ौम की तरफ़ उनके भाई सालिह (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा, उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा ऐ मेरी कौम तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह तआ़ला की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा माबूद** (होने के क़ाबिल) **नहीं,** (उन्होंने पैग़म्बरी के सबूत के लिए एक ख़ास मोजिज़े की मांग की कि इस पत्थर में से एक ऊंटनी पैदा हो तो हम ईमान लाएं बस आप की दुआ़ से ऐसा ही हुआ कि वो पत्थर फटा और उस के अन्दर से एक बड़ी ऊंटनी निकली आप ने कहा कि) **तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक साफ़ दलील** (मेरे पैग़म्बर होने की) **आ चुकी है,** (आगे उस का बयान है) **यह ऊंटनी है अल्लाह की जो तुम्हारे लिए एक निशानी बन कर आई है सो इस को छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में** (घास चारा) **खाती फिरा करे** (इसी तरह अपनी बारी के दिन पानी पीती रहे जैसा दूसरी आयत में है) **और इस को बुराई** (और तकलीफ़ देने के इरादे) **के साथ हाथ भी मत लगाना कभी तुम को दर्दनाक अज़ाब आ पकड़े(73) और** (ऐ क़ौम) **तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआ़ला ने तुम को आ़द** (क़ौम) **के बाद** (ज़मीन पर) **आबाद किया और तुम को ज़मीन पर रहने को** (पसन्दीदा) **ठिकाना दिया कि नर्म ज़मीन पर** (भी बड़े-बड़े) **महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश-तराश कर उन में** (भी) **घर बनाते हो, सो अल्लाह तआ़ला की** (इन) **नेमतों को** (और दूसरी नेमतों को भी) **याद करो** (और कुफ़्र व शिर्क से) **ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ** (यानी ईमान ले आओ मगर इतना समझाने के बाद भी कुछ ग़रीब ईमान लाए)**(74) उन की क़ौम में जो घमन्डी सरदार थे उन्होंने ग़रीब लोगों से जो कि उन में से ईमान ले आए थे** (उन से) **पूछा कि क्या तुम को इस बात का यक़ीन है कि सालिह** (अलैहिस्सलाम) **अपने रब की तरफ़ से** (पैग़म्बर बना कर) **भेजे हुए** (आए) **हैं, उन्होंने** (जवाब में) **कहा कि बेशक हम तो इस** (हुक्म) **पर पूरा यक़ीन रखते हैं जो उन को देकर भेजा गया है(75) वो घमन्डी लोग कहने लगे कि तुम जिस चीज़ पर यक़ीन लाए हो हम तो उस का इनकार करते हैं(76) बस** (न सालिह अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए और न ऊंटनी के हक़ अदा किये बल्कि) **उस ऊंटनी को** (भी) **मार दिया और अपने रब के हुक्म** (मानने) **से** (भी) **बग़ावत की और** (इस पर बेझिजक) **कहने लगे कि ऐ सालिह जिस** (अज़ाब) **की आप हम को**

धमकी देते थे उस को मंगवाइये अगर आप पैग़म्बर हैं(77) (क्योंकि पैग़म्बर का सच्चा होना ज़रूरी है) **बस पकड़ा उन को भूचाल ने सो अपने घरों में ओंधे के ओंधे पड़े रह गये**(78) **उस वक़्त सालिह** (अलैहिस्सलाम) **उन से मुंह मोड़ कर चले और कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम मैंने तुम को अपने रब का हुक्म पहुंचा दिया था** (जिस को मानने में कामयाबी थी) **और मैंने तुम्हारा** (बहुत) **भला चाहा** (कि किस तरह हमदर्दी से समझाया) **लेकिन** (अफ़सोस तो यह है कि) **तुम लोग** (अपने) **भला चाहने वालों को पसन्द ही नहीं करते** (इसलिए एक न सुनी और आख़िर बुरा दिन देखा)(79)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि बड़े-बड़े महल और आलीशान मकान बनाना भी अल्लाह तआला की नेमत हैं और उन का बनाना जाइज़ है। लेकिन अल्लाह वालों ने इस को इसलिए पसन्द नही किया कि ये चीज़ें इन्सान को भूल में डाल देने वाली हैं।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٠ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝٨١ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ
قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٨٢ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٨٣ وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٨٤

आयत नं० 80 से 84

और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) **को** (कुछ शहरों की तरफ़ पैग़म्बर बना कर) **भेजा जबकि उन्होंने अपनी क़ौम** (यानी अपनी उम्मत) **से कहा क्या तुम ऐसा बेहयाई का काम करते हो जिस को तुम से पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में से नहीं किया**(80) (यानी) **तुम मर्दो के साथ बदकारी करते हो** (अपनी) **औरतों** (से जिसमानी मिलाप) **को छोड़ कर,** (और यह बुरा काम किसी धोके में नहीं) **बल्कि** (इस बारे में) **तुम** (इन्सानियत की) **हद ही से निकल गये हो**(81) **और** (इन बातों का) **उन की क़ौम से कोई** (सही) **जवाब न बन पड़ा सिवाए इस के कि** (आपस में) **कहने लगे कि इन लोगों को** (यानी लूत अलैहिस्सलाम को और उन के मोमिन साथियों को) **तुम अपने** (इस) **शहर से निकाल दो** (क्योंकि) **ये लोग बड़े पाक-साफ़ बनते हैं** (और हम को गन्दा बताते हैं फिर गन्दों में पाको का क्या काम यह बात उन्होंने हंसी उड़ाने को कही थी)(82) **सो** (जब

बात यहां तक पहुंची तो) **हमने** (उस क़ौम पर अज़ाब भेजा और) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **को और उन के** (मोमिन) **साथियों को** (उस अज़ाब से) **बचा लिया** (इस तरह कि वहां से निकल जाने का पहले ही हुक्म हो गया) **सिवाए उन की बीवी के कि वो** (ईमान न लाने की वजह से) **उन ही लोगों में रही जो अज़ाब में रह गये थे(83) और** (वो अज़ाब यह था कि) **हम ने उन पर एक नई तरह की बारिश बरसाई** (कि वो पत्थरों की बारिश थी)**, सो** (ऐ देखने वाले) **देख तो सही उन मुजरिमों का अन्जाम कैसा** (डरावना) **हुआ(84)।**

नोटः- बैतुल मुक़द्दस और नहरे अरदन के बीच में वो जगह आज भी मौजूद है जहां क़ौमे लूत पर अज़ाब आया था। वहां ज़मीन की गहराई में ऐसा पानी भरा है जिस में कोई जानदार मछली मेंढ़क वग़ैरह ज़िन्दा नहीं रह सकता। इसलिए उस को ''बहरे मय्यत'' (मौत का दरिया) कहते हैं।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ
فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَ
تَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِن
كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ
خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾

आयत नं० 85 से 87

और हम ने मदयन (वालों) **की तरफ़ उन के भाई शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बना कर) **भेजा, उन्होंने** (मदयन वालों से) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह तआ़ला की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा माबूद** (बनने के क़ाबिल) **नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से** (मेरे पैग़म्बर होने पर) **साफ़ दलील** (कि कोई मोजिज़ा है) **आ चुकी है** (जब मेरी पैग़म्बरी साबित है) **तो** (शरीअत के हुक्मों में मेरा कहना मानो बस मैं कहता हूं कि) **तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो और लोंगों का उन की चीज़ों में नुक़सान मत किया करो** (जैसा कि तुम्हारी आदत है) **और ज़मीन में** (पैग़म्बरों के वास्ते से) **सुधार हो जाने के बाद फ़साद मत फैलाओ** (यानी हुक्मों की मुख़ालफ़त और कुफ़्र मत करो)**, यह** (जो कुछ मैं कह रहा हूं उस पर

चलना) **तुम्हारे लिए** (दुनिया व आख़रत दोनों में) **नफ़ा देने वाला है अगर तुम ईमान ले आओ** (85) **और तुम सड़कों पर इस नीयत से मत बैठा करो कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों को** (ईमान लाने पर) **धमकियां दो और** (उन को) **अल्लाह की राह** (यानी ईमान) **से रोको और इस** (राह) **में कमी** (और शक की बातों) **की तलाश में लगे रहो** (कि बातें घड़-घड़ कर लोगों को बहकाओ), **और उस हालत को याद करो जब कि तुम** (गिनती या माल में) **कम थे फिर अल्लाह तआ़ला ने तुम को** (गिनती या माल में) **ज़्यादा कर दिया, और देखो तो कैसा बुरा अन्जाम हुआ फ़साद** (यानी कुफ़्र व जुल्म) **करने वालों का**(86) **और अगर** (तुम को अज़ाब न आने का इससे शक हो कि) **तुम में से कुछ** (तो) **इस हुक्म पर जिस को देकर मुझ को भेजा गया है ईमान लाए हैं और कुछ ईमान नहीं लाए** (और फिर भी दोनों फ़रीक़ एक ही हालत में है यह नहीं कि ईमान न लाने वालों पर अज़ाब आ गया हो इससे पता चलता है कि आप का अज़ाब से डराना बेकार है) **तो** (यह ज़रूरी नहीं कि अज़ाब फ़ौरन आ जाए) **ज़रा ठहर जाओ यहां तक कि हमारे** (यानी दोनों फ़रीक़ के) **बीच में अल्लाह तआ़ला** (खुला) **फ़ैसला किये देते हैं** (यानी अज़ाब भेज कर काफ़िरों को तो हलाक करेंगे और मोमिनों को बचा लेंगे) **और वो सब फ़ैसला करने वालों से बेहतर हैं** (कि उन का फ़ैसला बिल्कुल ठीक ही होता है)(87)।

नोटः- अल्लामा क़ुरतबी रह० ने फ़रमाया जो लोग रास्तों पर बैठ कर शरीअत के ख़िलाफ़ नाजाइज़ टेक्स वसूल करते हैं वो भी क़ौमे शुऐब अलैहिस्सलाम की तरह मुजरिम हैं। बल्कि उन से ज़्यादा ज़ालिम व जाबिर हैं।